Rs. 5/-

श्री स्वामिनारायण

May' 2008



Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1.

















(१) अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीहरिप्रागट्योत्सव के प्रसंग पर बाल स्वरूप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव तथा महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न हुआ । (२) बाल स्वरूप श्री घनश्याम महाराज की अन्नकूट की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (३) अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में रामनवमी के उत्सव पर बालस्वरूप श्री घनश्याम महाराज के पाटोत्सव तथा महापूजा के यजमानगण श्रीहरि के छठ्ठे तथा ७ वें वंशज की आरती उतारते हुए । (४) श्रीहरि जयंती प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर में समूह महापूजा में बिराजमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री (५, ६, ७, ८) श्रीहरि जयंती के प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर में प्रसादी के सभामंडप में अखण्ड मंत्र जाप तथा कीर्तन भक्ति का कार्यक्रम ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम नारायणपुरा,
अहमदाबाद. फोन : २७४९९५९७,
९८२५३०९५९७ फेक्स : २७४१९५९७
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञासे
तंत्रीश्री
स.गु. स्वामी नारायणस्वरुपदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 2 अंक : 13 मई -2008

अनुक्रमणिका

१ अस्मदीयम ०२
२ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा ०३
३ प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०३
४ हे युवानो !! ०४
५ सत्संग में समझ ०६
६ जानने योग्य ०८
७ संत की प्रसन्नता ०९
८ यज्ञ की व्याकुलता १०
९ सत्संग सुरभि १३
१० सत्संग बालवाटिका १५
११ भक्तिसुधा १७
१२ प्रश्न पेटी ??? २०
१३ समाचार वृत्तांत २१

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१
से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अस्मदीयम्



तंत्रीश्री की तरफ से.....

मुमुक्षु को सत्संग में भगवान की भजन करते समय अनेक प्रकार के आवरण आते हैं। उसमें व्यवहारिक अवरोधकी अपेक्षा ज्ञान एवं समझ तथा निश्चय के अभाव में आध्यात्मिक विघ्न अधिक आते रहतें हैं। अपनी दृष्टि से जब विचार करते हैं तो गुण-अवगुण तथा दोष-निर्दोष के भाव में इष्टदेव के प्रति तथा धर्मवंशी आचार्य के पद में, संतो में, शास्त्रो में, तथा सत्संगियों में कभी-कभी गुण-दोष का मिश्र प्रतिभाव आता है। ऐसे संयोग उपस्थित होने में मुख्य कारण यह है कि इष्टदेव के प्रति निश्चय का अभाव। श्रीहरि ग.व. ६३ वें में कहें हैं कि जिन्हें निश्चय में संदेह हो उन्हे भगवान में जब कुछ सामर्थ्य दिखाई देता हैं तोआनंद की अनुभूति होती है, जब सामर्थ्य दिखाई नहीं देता तो अन्तर में झांका पड़जाता है। वड़ताल के १२ वें वचनामृत में कहते हैं कि ऐसे व्यक्ति के मान में ऐसा भी विचार होने लगता है कि हमारा कल्याण होगा या नहीं ? हम जब मरेंगे तो देवता होंगे या राजा या भूत होंगे ? लेकिन जिन्हे स्वामिनारायण भगवान की महिमा में पूर्ण समझ के साथ निश्चय हुआ है वे तो ऐसा मानलें कि हमें जब से भगवान मिले हैं उसी समय से मेरा कल्याण हो गया है। इसके अलावाँ जो मेरा दर्शन करेंगे या मेरी कथा सुनेंगे उनका जीव पाप से मुक्त होकर मेरे परमपद को प्राप्त होंगा। जहाँ पर प्रत्यक्ष भगवान हैं वहीं परमधाम हैं। ये सभी संत नारद सनकादिक की तरह तथा भक्त उद्धव, अक्रूर की तरह हैं। ब्रह्मांद, मुक्तानंद, दादा खाचर पर्वत इत्यादि ये सभी उसी कोटि के हैं। महिलायें जीवु माँ लाडुमां भी उसी मुक्ति कोटी की हैं। अब हमें कुछ करने की जरुरत नहीं है मैं अक्षरधाम को प्राप्त कर लिया हूँ। ऐसे विचार जिसके हृदय में होने लगे तथा हृदय में आनंद की अनुभूति होने लगे तो उसका परिपक्व निश्चय है। ऐसा जानना। ऐसा जिन्हे परिवक्व निश्चय होगया है उसके लिये श्रीहरि ग.प्र. ६४ में कहते हैं कि स्वयं अत्यंत त्यागी हो फिर भी वह यदि प्रवृत्ति मार्ग की क्रिया में लगा हो तो भी वह पीछे हटता नहीं है, थोड़ीभी कचास उसमें रहती नहीं है, अपनी प्रसन्नता से क्रियाशील होकर इष्टदेव की इच्छा से अपने स्वभाव को छोडकर, अवगुण होते हुए भी कथा कीर्तन के विना एक क्षण भी जो न रह सके उसका परिपक्व निश्चय समझना। ऐसे निश्चय के जिसमें अभाव हों उसमें गुण-अवगुण सतत आते जाते रहतें हैं तथा अंत:करण अर्धदग्धकाष्ठ की तरह समझना चाहिये, वह सुखपूर्वक भजन भी नहीं कर सकता, यदि भजन कता है तो मनस्वी होता है। सर्वोपरि भगवान के प्राप्ति के आनन्द की अनुभूति नही हो पाती है। इसलिये महाराज का निश्चय होना ही सत्संग का मूल है। इसमें थोडी भी कमी हो तो सुख दु:ख का अनुभव होता रहता है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

-साधु नारायणस्वरुपदास का जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

अप्रैल -२००८

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज में शदाब्दी महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर कालूपुर में अक्षरभुवन बाल स्वरुप घनश्याम महाराजके अभिषेक अपने हाथों से किये।

१७. से २३. अमेरिका के कलिवलेन्ड के नूतन (आई.एस.एस.ओ. संस्थापित) शिखरी श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

२४. से २५. कच्छ भुज में पदार्पण।

२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर नाथद्वारा के पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

२७. श्री चेतनकुमार नवनीतलाल ठक्कर के यहाँ पदार्पण, घोड़ासर।

२८. उमेदगढ (इडरदेश) रजत जयंती प्रसंग पर पदार्पण।

२९. नारायण पर (कच्छ) पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

३०. श्री स्वामिनारायण मंदिर लसुन्द्रा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।



प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

अप्रैल -२००८

२५. वडुगाँव में आयोजित क्रिकेट टुर्नामेन्ट के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण।

२७. एप्रोच बापूनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर बाल महोत्सव के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण।

कर्मशक्ति नवा नरोडा श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२८. आस्ट्रोप्योर सिस्टम प्रा.लि. के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, नवा नरोडा।

२९. उमेदगढ (ता. ईडर) श्री स्वामिनारायण मंदिर के पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण।

हे युवानो !!



- कोटारी स्वामी रामानुजदासजी

युवानो में रही हुई अगाध शक्ति तथा लगन को सत्संग के काम में लगाने से उत्तम परिणाम लाया जा सकता है। जिस युवान में जो कला हो, जिस दिशा में वह गति कर सकता हो उसी तरफ उसे लगाना चाहिये। बड़ो को चाहिये कि वे युवानो के अंदर की शक्ति को कार्यशील तथा रचनात्मक बनाने में प्रेरणादायक बनें। युवानो को भी चाहिये कि अपनी शक्ति को केन्द्रित करके सफलता की चाभी की खोज करें।

जीवन में आने वाले संयोगो पर बैठे रहने वाला युवान मनुष्य नहीं बल्कि लकड़ी है। इसलिये युवानो को चाहिये कि अपने लक्ष्य को ध्यान में रखकर सिद्धि प्राप्ति के लिये कटिबद्ध होजाय। कारण यह कि युवान अपने सत्संग के भविष्य हैं। यथार्थरुप से देखा जाय तो युवान ही भावी का निर्माण कर सकते हैं।

युवक मंडल के आगे रहने वाले युवान तथा बड़े लोगों को चाहिये कि सत्संग में आनेवाले छोटे - बड़े, पढे-अनपढ, गरीब-अमीर सभी को मन से स्वीकार करके उन्हें योग्य काम देना चाहिए। जीवन में आगे आना हो तो युवानों को किशोरो को, बालको को सत्संग के कार्य में आगे लाना हो तो बाल मंडल का उत्तरदायित्व उन्हें दिया जाय।

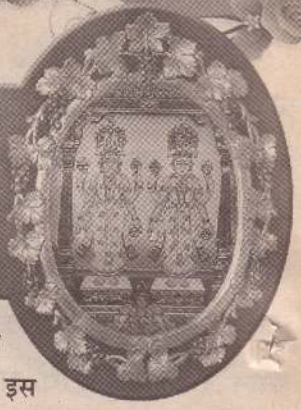
किसी से कीसी की बराबरी नहीं करनी चाहिये। श्रीजी महाराज ने प्रथम के छट्ठे वचनामृत में कहा है कि सत्संग में जो विवेकी हों वे अपने गुण न देखकर दूसरो के गुणों को ही देखें तथा अपने में अवगुण देखें। इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक युवान को अपने भीतर की वास्तविकता को खोजना पड़ेगा।

वास्तविकता अर्थात् बीज में रहा हुआ वृक्ष, कलियों में रहा फूल, साम में रही सुबह। जिस प्रकार छोटे बीज में वृश्र छिपा हुआ है तथा बगीचे में खिलने के लिये, मोगरा, जूही चमेली जैसे सुगंधित फूल विद्यमान रहते हैं। जिस प्रकार सूर्यास्त में सूर्योदय भी छिपा हुआ है - इसी तरह प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई रचनात्मक शक्ति छीपी हुई है, इसी को बाहर लाने की जरुरत है।

कारण यह की वृद्ध लोगों से जो प्रेरणा मिलती है वह यथार्थ होती है क्योंकि वे भी कभी बालक थे, इसलिये वे जो बात करेंगे तो अनुभव की बात करेंगे। प्रत्येक व्यक्ति में विचारों की सृष्टि १८ से २५ वर्ष में होने लगती है। इस समय विकास का सर्जन कर सकता हैं। जो एक दिन वास्तविक रुप में सत्संग को

प्राप्त हो सकता है। इसलिये बालकों के जीवन को प्रकाशमय बनाने के लिये सत्संग सभा करनी चाहिये। जैसे - बाल मंडल, किशोरमंडल तथा युवक मंडल द्वारा सभा करके सत्संग का विकास एवं जीवन का विकास करना चाहिये। हमें विशेष ध्यान देना चाहिये कि सभाओं में सत्संगियों का विशेषयोग दान है। इसलिये सत्संगियों के भावी को अधिक विकासशील बनाना हो तो प्रत्येक सभा में अपने बच्चों को आने की प्रेरणा दें। प्रतिदिन् मंदिर में आवें। पूजापाठ करें। सत्संग से सम्बन्धित प्रवृत्ति में लगाकर कार्यशील बनावें। जैसे - आपके विस्तार में ऐसी सभा की जाय जिसमें युवान आवें तथा ५०० जितने कार्यशील होकर अलग अलग विस्तारों में बाल मंडल, युवक मंडल में १५ से २० (युवान भाग लें तो ७५०० (सात हजार पांचसौ) बालकों को तथा १०००० (दश हजार) युवानो को लक्ष्य प्राप्ति का लाभ मिले। इससे सत्संग पल्लवित होकर एकदिन बहुत बड़ा उद्यान बन सकता है। यद्यपि आज भी अनेकों स्थलों पर युवक मंडलो की प्रवृत्ति दिखाई देती है तथापि इसे और प्रगतिशील बनाने की आवश्यकता है। युवानों में छिपी हुई बीज की तरह वृक्ष की वास्तविकता एक दिन अवश्य प्रगट होगी।

आज भी सत्संग में तथा समाज में, युवानो में ज्ञान गोष्ठी की चर्चा होनी चाहिये। कितने युवानों के मन में अनेक प्रश्नों को समझने की चाहना है। कितने तो अपने जीवन में प्रोत्साहन चाहते हैं। कितने युवान तो अपने जीवन को आदर्शमय बनाने के लिये संतो की तथा आत्मीयजनों की मधुर वाणी सुनने की इच्छा रखते हैं। लेकिन यह सदुपदेश देने वाले कम हैं। इसलिये आप सभी को निर्देश देना है कि जो बड़े लोग हैं वे युवानो के लिये तथा युवान अपने नई पीढी के लिये प्रतिदिन एक घन्टा समय निकालकर श्रीजी महाराज की आज्ञानुसार वर्तन करें। या मार्गदर्शन देंगे तो हम सभी का पुरुषार्ष सार्थक हो जायेगा। सत्संग में यह प्रेरणारुप कहा जायेगा। कारण यह की किसी जीव को अभयदान करेंगे तो श्रीजी महाराज खूब प्रसन्न होंगे। कथा-प्रवचन के माध्यम से तथा सत्संग सभा के माध्यम से युवानों के भीतर की लघुताग्रंथि दूर होगी और युवान जागरुक होकर समाज की सेवा कर सकेगा। जिस प्रकार नदी में बाढ आती है तो बहुत सारे गाँव बह जाते है या डूब जाते हैं। यदि बाढ रोकने का काम बंद करके नहर के माध्यम से पानी को योग्य स्थान पर लेजायेंतो उससे गाँव-गाँव प्रकाशमय बन जायेगा। सारे गाँव में हरियाली फैल जायेगी। इसी तरह अपने सत्संग में भी युवानों को योग्य दिशा का निर्देश देने से सत्संग में क्रांति लाई जा सकती है। हमें यह विचार करना है कि हमें सर्वोपरि श्रीहरि स्थापित सर्वोपरिगादी पर अगर स्वरुप आचार्य महाराजश्री तथा संत मिले हैं। तो आज से संकल्प करें कि एक बालक तथा एक युवान को सत्संग में लगाकर श्रीहरि तथा आचार्य महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।



सत्संग में समझ

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने आश्रितों के लिये परमकल्याणकारी शिक्षापत्री लिखकर १५४ वें श्लोक में अपने आश्रितों के लिये "विवेकी" शब्द से प्रतिष्ठित किया है। हमें भी श्रीहरि का सच्चा आश्रित बनकर विवेकी शब्द से अलंकृत होने के लिये महाराज की आज्ञा में रहना चाहिये। ब्रह्मानंद स्वामी सत्संग की मर्यादा का स्वयं पालन करते और दूसरों से पालन कराते। यही अहमदाबाद गादी संस्थान की महत्ता है। आज के समय में इस यथार्थता से सभी सत्संग परिचित हो, इस हेतु से यहाँ हम कुछ उल्लेखकर रहे हैं।

हरिभक्तों की जानकारी के लिये विवेक-विचार के विषय में बड़े-बड़े संतो से जानकारी किया तो उन्हों ने बताया कि हम जो कुछ हैं वह सब हरिभक्तों की देन है। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने दीक्षा दिया इसीसे हमारी प्रतिष्ठा है। हमारे माहात्म्य के विषय में कुछ लिखना नहीं, यही उनकी महानता है। जब इस वात को महाराजश्री से कहा तो प.पू. महाराजश्री ने कहा कि शिक्षापत्री १२९ श्लोक के अनुसार संत हमारे लिये आदरणीय है। इस संप्रदाय में प.पू.ध.धु. आचार्य श्री संत तथा हरिभक्त ए एक दूसरे के पूरक है। सत्संग के एक अभिन्न अंग है। श्रीजी ने अपना संपूर्ण सामर्थ्य धर्मवंशी आचार्य को दिया है। अवतार जितनी शक्ति-सामर्थ्य संतो में होती है। हरिभक्त तो निर्वासनिक हो जाते हैं जिससे अक्षरधाम प्राप्ति के सिवाय कोई दूसरी इच्छा ही नहीं होती। ए तीनों अंगो के माहात्म को समझना चाहिये लेकिन समानता का भाव आने नहीं देना चाहिये।

१. हरिभक्त जब संतो का दर्शन करने जांय तो हाथ न मिलावें बल्कि चरण स्पर्श करें। मंदिर में महंत हों या अन्य कोई साधु हों सभी को साष्टांग प्रणाम करना श्रेयष्कर है, बराबर का संबन्धरखना ठीक नहीं है। संप्रदाय के नियमानुसार बाहर से जब संत आवें तो वे भी आपस में दंडवत् प्रणाम करें। समान उम्र वालें प्रेम से गले से गले मिलें। श्रीहरि वचनामृत में इस विवेक का विवेचन करते हुए कहते हैं कि जिनकी अधिक शरदऋतु वीत गई हो उन्हें कम शरदऋतु वाले प्रणाम करें। शि.श्लो. ३७ के अनुसार अपने आचार्य महाराजश्री (गुरुजी) के दर्शनार्थ जांय तो खाली हाथ न जाय। हम जो अर्पण करते हैं वह कई गुना अधिक होकर मिलता है। इसलिये दर्शन् के समय रंक हो कर मिलने न जाय।

२. हरिभक्त संतो की अन्न-वस्त्र से सेवा अवश्य करें। अपनी शक्ति के अनुसार संतो की सेवा करनी चाहिये। संत भी अपरिग्रहवृत्ति रखें। शि. पत्री के ६६ वें श्लोक के अनुसार भक्तों को प्रेरणा करनी चाहिये। सबसे उत्तम सेवा तन की है, बाद में मनकी, अंत में धन की है।

३. जब हम मंदिर में देव दर्शन के लिये गये हों या मंदिर की व्यवस्था में आये हों तो महंतजी या किसी अधिकारी वर्ग द्वारा शि.पत्री श्लोक ७५ के अनुसार हमें चाय-पानी के लिये आग्रह करें तब प्रसंगानुसार प्रसाद समझकर उसे ग्रहण करना चाहिये। लेकिन यह समझते हुए कि हमारे इष्टदेव हमारा सन्मान कर रहे हैं, इसलियें शि.पत्री श्लोक १५१ के अनुसार देव को यथाशक्ति दान भेंट देना चाहिये। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा संत द्वारा प्राप्त प्रसाद भी जीवन को मोक्ष के मार्ग पर लेजाता है। इसलिये सदा सद् गुण के लिये ही प्रयत्न करना चाहिये।

४. मंदिर में देव दर्शन या प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के दर्शनार्थ जांय या सत्पुरुष के दर्शनार्थ जांय तो अवश्य तिलक-चंदन-कंठी धारण करके जांय। यही हरिभक्तों का सौभाग्य चिन्ह है। इन चिन्हों को धारण करने से हृदय में विराजमान श्रीहरि का अन्य को दर्शन होता है। एक समय प.पू. बड़े

महाराजश्री विदेश की धर्मयात्रा में थे । एक हरिभक्त वहाँ आकर निवेदन किया कि हे महाराज ! मेरी कंठी अचानक टूट गई है और हमें बाहर जाना है, आप दूसरी कंठी पहना दीजिये । प.पू. महाराजश्रीने सेवक से कंठी लाने की आज्ञा की । परंतु सेवक देव सेवा में थे जिससे २-४ मिनट बिलम्ब हो गया । इसलिये प.पू. महाराजश्रीने अपने गले की कंठी निकाल कर भक्त के गले में डाल दिया । वह भक्त अपने कार्य पर चला गया तो बाद में कंठी आई तो उसे स्वयं धारण कर लिये कर्म का सहारा लेकर व्यवहार को कैसे सुरक्षित रखा जाय इस उदाहरण से स्पष्ट समझा जा सकता है । प.पू. महाराजश्री अपने हरिभक्तों के धर्म की रक्षा करते रहते हैं । स्वंय श्रीजी के स्वरुप होकर भी कंठी की महिमा को कितना समझते हैं । महाराज श्री का एक यह अनुरोधहै कि कंठी, तिलक, चंदन के विना एक क्षण भी नहीं रहना चाहिये । इस उपदेश को हृदय से स्वीकार करके अपने जीवन में उतारना चाहिये.

५. हम जब मंदिर में दर्शन के लिये जांय-उस समय मंदिर में भगवान का भोग आया हो तो मंदिर के पट बन्द होने पर दर्शन प्रदक्षिणा एवं साष्टांग प्रणाम नहीं करना चाहिये । यदिआप बाहर से आये हो तो मंदिर की प्रदक्षिणा में साष्टांग प्रणाम करें लेकिन सन्मुख से नही । बाद में शांति से बैठकर भोजन के पद सुमधुर स्वर में गाना चाहिये ।

६. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के दर्शनार्थ या देव दर्शनार्थ गये हो तो उस समय धक्का-मुक्की नहीं करना चाहिये । उस समय अपने को सबसे छोटा तथा अन्य सभी को अपने से सभी को बड़ा समझना चाहिये । ऐसा समझने से अपना अहं कम होगा । हमें व्यवहारिक कार्य के लिये बाहर जाना है इसलिये मंदिर से जल्दी जाना है, इसकी अपेक्षा व्यवहारिक कार्य कम करके मंदिर में अधिक समय बिताना चाहिये । मृत्यु के बाद भी जिसके पास हमें अनंतकाल तक रहते है, इस समय आपके पास उसके संनिकट रहने का समय ही नहीं है । लेकिन यह उचित नहीं है । किसी पर्व (त्यौहार) पर प्रभु की मात्र झांकी का ही दर्शन होगा, सम्भव है कि धक्का-मुक्की में दर्शन मात्र हो सके तो भी दूसरे को दर्शन का लाभ मिले इसका ध्यान आवश्यक है । इससे देव दर्शन का आनंद मिलेगा । देव दर्शन के लिये आपकी तरह लाखों लोग है जब आप ही दरवाजा पकड़ कर खड़े हो जायेंगे तो अन्य का क्या होगा । भगवान कहाँ से प्रसन्न होंगे । ऐसी स्थिति में हमें समझना होगा कि हमारे पीछे हजारों भक्त आबाल वृद्ध नरनारी सभी खड़े है । ऐसे भी दर्शन के लालायित रहतें हैं जो शरीर से स्वस्थ नहीं होते, उन्हें दर्शन का यदि लाभ मिलजाय तो कितना पुण्य होगा । मर्यादा में रहकर दर्शन करना चाहिये । मंदिर के विशाल मैदान से महाराजश्री की पगड़ी का भी दर्शन हो जाय तो वही पुण्य मिलने वाला है, तथा इसके साथ जितना समय आप अक्षरधाम में है इतना समझना चाहिये । इस प्रकार के अनुशासन से सभी को दर्शन का लाभ मिलेगा सभी सुखिया होंगे । धक्का-मुक्की से स्वयं भी दर्शन से बंचित तथा अन्य भी । जब परमात्मा साक्षात् विराजें हों तो ऐसा विवेक होना परमावश्यक है ।

७. एक बात अवश्यध्यान में रखनी चाहिये कि जब हम सभा में बैठे हों तो बीच से उठकर नहीं जाना चाहिये । कथा वक्ता साक्षात् नारायण स्वरुप है । सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्रीजी महाराज के अपर स्वरुप है । बड़े संत पूज्य हैं जिसमें गुरु शिष्य का भाव परिलक्षित होता है । बड़े भक्त श्रीजी महाराज के ध्यान में बैठे होते हैं । चित्र प्रतिमा में साक्षात् श्रीहरि का आविर्भाव होता है । सभी प्रमाणित शास्त्र श्रीजी स्वरुप है । ऐसे शास्त्रों के श्रवण के समय उठकर जाना महान दोष है । जब ऐसा करते है तो यह समझना चाहिये कि हम देव-आचार्य-संत-शास्त्र का त्याग करने जारहे हैं । कोई मुमुक्षु ऐसा नहीं कर सकता ? जीवन मृत्यु का कारण हो तो बात अळग अन्यथा ऐसा नही करना चाहिये । बीच में से उठने की संभावना होतो कही एकतरफ बैठना चाहिये जिससे दूसरे को विक्षेप न हो । छोटे बच्चो को लेकर सभा में नहीं बैठना चाहिये । सभा के बीच में वात नहीं करनी चाहिये । रसनेन्द्रिय को विराम देकर केवल कर्णेन्द्रिय को जागृत रखना चाहिये । जिससे कथा का आनंद आपको तथा अन्य को मिल सकता है । अन्यथा कथा श्रवण का पुण्य नष्ट हो जायेगा । *(क्रमशः)*

जानने योग्य

- साधु धर्मकिशोरदास (प्रयागराज यु.पी.)



छ शास्त्र (षडदर्शन)

(१) व्याकरण शास्त्र (२) न्याय शास्त्र (३) मीमांसा
(४) योग शास्त्र (५) सांख्य शास्त्र (६) दर्शन शास्त्र ।

नवनिधि

(१) महामद (२) पक्ष (३) शंख (४) मकर (५) कच्छप
(६) मुकुन्द (७) कुन्द (८) नील (९) खच ।

सप्तर्षि

(१) गौमत (२) भारद्वान (३) विश्वामित्र (४) कश्यप
(५) जमदग्नि (६) वशिष्ट (७) अत्रि ।

चार वेद

(१) ऋग्वेद (२) यजुर्वेद (३) सामवेद (४) अथर्ववेद ।

चौदलोक या ब्रह्मांड

नीचे : (१) अतल (२) वितल (३) सुतल (४) तलातल
(५) महातल (६) रसातल (७) पाताल ।
ऊपर : (१) भूः (२) भुवः (३) स्वः (४) महः
(५) जनः (६) तपः (७) सत्यम् ।

नवधा भक्ति

(१) श्रवण (२) कीर्तन (३) स्मरण (४) अर्चन (५) वंदन
(६) पादसेवन (७) दासत्व (८) सखा (९) आत्मनिवेदन ।

षटकर्म

(१) स्नान (२) संध्या (३) देवपूजा
(४) तर्पण (५) होम (६) स्वाध्याय ।

षड् दोष

(१) काम (२) क्रोध(३) लोभ (४) मोह
(५) स्वाद (६) अभिमान ।

पंच देव

(१) गणपति (२) शक्ति (३) सविता
(४) विष्णु (५) शिव ।

चार आश्रम

(१) ब्रह्मचर्य (२) गृहस्थ (३) बानप्रस्थ (४) सन्यास ।

चार अवस्था

(१) स्थूल (२) सूक्ष्म
(३) कारण (४) महाकारण।

अष्ट सिद्धि

(१) अणिमा (छोटा होना (२) महिमा (बडा होना)
(३) लघिमा (हल्का होना) (४) गरिमा (खूब भारी होना)
(५) प्राप्ति (इच्छा पूर्ति) (६) प्राकाम्य (सभी तरह से पूर्णता का अनुभव) (७) ईशित्व (खूब सामर्थ्यवान होना)
(८) वशित्व (किसी को वश में करना) ।

चार धाम

(१) बद्रिकाश्रम (२) रामेश्वर
(३) द्वारिका (४) जगन्नाथपुरी ।

पंचभूत

(१) पृथ्वी (२) जल (३) तेज (४) वायु (५) आकाश ।

पंच विषय

(१) शब्द (२) स्पर्श (३) रुप (४) गंध(५) रस।

पंच ज्ञानेन्द्रिय

(१) आँख (२) कान (३) नाक (४) जीभ (५ त्वक् ।

चार अंतःकरण

(१) मन (२) बुद्धि (३) चित्त (४) अहंकार ।

चौदह देवता

(१) दिक्पाल (२) वायु (३) सूर्य (४) अश्विनी (५) कुमार
(६) अग्नि (७) इन्द्र (८) विष्णु (९) प्रजापति (१०) यम
(११) ब्रह्मा (१२) चन्द्र (१३) वासुदेव (१४) रुद्र ।

अठ्ठारह पुराण

(१) ब्रह्म पुराण (२) पद्म पुराण (३) शिव पुराण (४) भागत पुराण (५) नारद पुराण (६) मार्कन्डेय पुराण (७) अग्नि पुराण (८) भविष्य पुराण (९) ब्रह्मवैवर्त पुराण (१०) लिंग पुराण (११) मत्स्य पुराण (१२) कूर्म पुराण (१३) स्कंद पुराण (१४) गरुण पुराण (१५) नृसिंह पुराण

अनुसंधान पृष्ठ - १२ पर...



संत की प्रसन्नता

- साधु भक्तवत्सलदास (तपोवन मंदिर लीबडी)

संत कृपाए सुख उपजे, संत कृपाथी सरे काम।
संत कृपाए पामीये, पूरण पुरुषोत्तम धाम॥

गुजरात प्रांत में सीजीवाडा नाम का एक गाँव है। इस गाँव में भगवान स्वामिनारातण तथा संतो की निष्ठावाले बहुत भक्त थे। उनमें एक भक्त जगरुपबारोट भी थे। लेकिन वे अपने गुरु में इतनी निष्ठा रखते थे कि चाहे जो भी हो निष्ठा में कमी नहीं आने देते थे। परिणाम स्वरुप महाराज भी ग.म. प्र. ५८ में कहे हैं कि यदि संत प्रसन्न हो जांय तो चाहे जैसा भी खराब प्रारब्धहो अनुकूल हो जाता है। उस भक्त की संतो पर खूब निष्ठा थी। इस में भी मुक्तानंद स्वामी का वह शिष्य था। इसलिये उसके मन में होता कि स्वामी मेरे गाँव में कब पधारेंगे। इस भाव से वे स्वामी की बारंबार प्रार्थना किया करते थे। लेकिन हुआ ऐसा कि एक संत को ईर्ष्या के कारण मुक्तानंद स्वामी का बडप्पन देखा नहीं गया, इसलिये वह मन ही मन स्वामी का खराब करने के लिये सोचने लगा।

एक दिन एक नापित को स्वामी का मुंडन करने के लिये जाते देखकर उसे बुलाया और कहा कि किसका तूं मुंडन करने जा रहा है उसने बताया मुक्तानंद स्वामी का वह बहुत बडे संत है उनका बाल-नख ले ले तो तुम्हारा सभी काम सिद्ध हो जायेगा। उसने ऐसा ही किया। वह वापस, जब आ रहा था उस समय रास्ते में ब्रह्मचारी ने पूछा क्यों काम हुआ ? उसने हाँ कहकर नख-केश उस ब्रह्मचारी को दे दिया।

एकबार सभा मंडप में सभा हुई। सभी व्यस्थित बैठ गये। पूज्य महाराजश्री भी आकर विराजमान हो गये। ब्रह्मचारी खड़े होकर बोलने लगा कि अभी महाराज का चरणचिह्न मिटा नहीं कि अधर्म प्रारम्भ हो गया। महाराजश्री ने कहा क्या हुआ ? तब उस ब्रह्मचारीने कहा कि आप जिसे बढावा दिये हैं ऐसे मुक्तानंद स्वामी नापित को नख-केश देकर पुजाना चाहते हैं। महाराजश्री स्वामी को देखने लगे। लेकिन स्वामी इस विषय में कुछ जानते नहीं थे। यही आरोप दूसरे पर लगा होता तो स्वामी स्वयं आगे आकर बोलते लेकिन स्वयं पर आरोप था। इसलिये चुप बैठे रहे। इतने में उनका अंतरंग शिष्य खड़ा होकर कहा इसमें क्या प्रमाण है कि स्वामी केश-नख द्वारा अपनी पूजा कराना चाहते हैं। आप उस नापित का नाम बताइये हम उसे इस सभा में बुलाकर ले आते हैं। ऐसा ही हुआ। वह नापित सभा में आया। बड़े कड़े शब्द में उससे पूछा गया कि तू सत्य बोल क्या सही हैं। वह नापित जो सही था वह कह सुनाया। यह सुनकर ब्रह्मचारी का मुंह नीचा हो गया और वहाँ से चला गया।

लेकिन स्वामी भक्त ऊपर इतना प्रसन्न हुए कि उस भक्त के साथ उसके गाँव पधारे। इससे उसके आनंद की सीमा न रही। उस भक्त के घर निवास किये। भोजन की तैयारी हुई। सानुकूल भोजन बना। स्वयं खीर पूडी बनाकर भगवान का भोग लगाये और प्रसाद ग्रहण किये। सब कुछ के बाद भी उस भक्त के घर में खुशी न होने का कारण पूछे. तब भक्त ने बताया स्वामी मेरा एक बेटा था जो शरीर छोड़कर चला गया। स्वामीने कहा नहीं ऐसा नहीं हो सकता। चलो देखते है, वह कहां है ? जिस खाट पर उसे सुताया गया था वहां स्वामी गये और उसके मुख में ठाकुरजी के प्रसादी का जल डाले तथा कान में स्वामिनारायण मंत्र बोले, इतने में वह बालक उठखडा हो गया। अब तो वह भक्त गुरु-स्वामी के गोंद में माथा रखकर आनन्दित होकर रोने लगा। स्वामीने कहा अब क्यों रो रहे हो आज मैं तुम्हारे ऊपर खूब प्रसन्न हूँ, मांगो और क्या चाहिये। तब उस भक्त ने कहा, आप की कृपा चाहिये, इससे अधिक कुछ नहीं।

इसलिये प्रिय भक्तों ! इसी तरह अर्थात् जगरुप बारोट भक्त की तरह आप लोगों की भी आचार्य महाराजश्री तथा संतो में निष्ठा होगी तो आप सभी के विघ्न इसी तरह दूर हो जायेंगे। ऐसी नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

यज्ञ की व्याकुलता



- चंद्रकांत मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

ओम् स्वाहा ओम् स्वाहा । ऐसा बोलकर ब्राह्मण लोग वेद विधिपुरस्सर अग्नि में आहुति दे रहे थे उसी समय अपनी दैनिक क्रिया पूर्ण करके अपने भक्तों के साथ भगवान स्वामिनारायम यज्ञ शाला में पधारे । उस समय सभी ब्राह्मण देवता खड़े हो गये ।

ओम् स्वामिनारायणाय नमः ओम् वैष्णवक्रतुकारकाय नमः, ओम् अहिंसा यज्ञ पुरस्कर्त्रे नमः ऐसा कहकर श्रीहरि की प्रशंसा करने लगे । श्रीहरि भी ब्राह्मणों के चरण स्पर्श किये । प्रत्येक ब्राह्मण को चन्दन पुष्प से पूजन किये । बाद में अपने सुंदर सिंहासन पर बैठाकर ब्राह्मणों से कहने लगे ।

आप लोंगों से जो कहना चाहते हैं, उस विषय में बुरा मत मानना । हमारे मन में ब्राह्मणों तथा अग्निदेव के प्रति बहुत आदर है । हमारे लिये दोनो पूजनीय हैं । लेकिन घी का उपयोग आपलोग स्वयं के लिये तथा अग्नि में हवन के लिये अधिक कर रहे हैं । अब केवल तीन दिन तक का घी बचा है । आपलोग घी का खूब उपयोग करें लेकिन विगाड़ (दुरुपयोग) न करे ।

ब्राह्मणो ने कहा हे महाप्रभु ! आप जगत के आधार है । विश्व के प्राण है । सृष्टि के पालक है । आपके विना तृप्ति कौन कर सकता है ? यज्ञ में हम स्वार्थ वृत्ति नहीं रखते । अग्नि देव तथा ब्राह्मणों द्वारा यज्ञनारायण प्रसाद स्वीकारते हैं । अग्निदेव को प्रसन्न करने के लिए हम भोजन करते हैं, इससे अधिक तो उन्हें प्रसन्न रखने के लिए घृतका उपयोग करते हैं । अग्निदेव प्रदीप्त हों, तृप्त हों तभी हमारे पेट में गया घी पचता हैं । अब आप कह रहें हैं तो हम कम घी का उपयोग करेंगे । वैश्वानर भी आपके स्वरुप हैं । इसीलिये आपको प्रसन्न करने के लिए हम अग्निदेव को अधिक घी अर्पण करते हैं । हमें पहले पता चल गया होता तो अग्नि में तथा ब्राह्मणों में अधिक घी का उपयोग नहीं करते । हमलोगों से भूल हो गयी । अब भूल नहीं होगी ।

श्रीहरि ने कहा नहीं, नहीं । आपलोग संकोच मत कीजिये । आपलोगों ने जो सत्य कहा है उससे हमें पूर्ण संतोष हुआ है । आपलोग जान बूझ कर घी विगाड़े नहीं है । यज्ञ में ही उपयोग करते हैं । अब आप लोग किसी चिंता के विना स्वयं के लिये तथा यज्ञ के लिये जितना चाहें उतना उपयोग कर सकते हैं । जितना घी मांगेगे उससे भी अधिक लाकर देंगे ।

ब्राह्मण घीके लड्डू बनाकर खूब प्रसन्न हुए । आश्विन कृष्ण त्रयोदशी को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई । ब्राह्मणों को खूब दक्षिणा दिये । अवशिष्ट घी ब्राह्मणों को पिलाये । इसके बाद यह कहे कि जो जितने सेर घी पीयेगा उस प्रमाण से एक-एक रुपया दक्षिणा देंगे । ऐसा ही किये । ब्राह्मण प्रसन्न होकर कहने लगे हे श्रीहरि ! आप जैसे संतवल्लभ हैं, जैसे भक्त वल्लभ हैं वैसे ही विप्रवल्लभ भी हैं । आपकी कीर्ति खूब फैले । आप इसी तरह ऐसी यज्ञ करते रहें ।

एक संत आकर कहे, हे महाराज ! भंडार में घी, गुड़, चीनी आंटा (पिसान) दाल, चावल, मरिच-मसाला इत्यादि अधिक बचा पड़ा है । इसका क्या करें ? श्रीहरिने कहा संत-हरिभक्त जो भी आये हैं उन्हें कई दिन तक खिलाइये । गाँव-गाँव में प्रसाद का वितरण कीजिये । गुरु

रामानंद स्वामी की कृपा से जब-जब हम यज्ञ करतें हैं तो सिद्धा-सामग्री बचती ही है।

सं. १८६५ में श्रीहरि चार महीनें रुक कर ग्रामजनों के लिये एक तालाब खोदवाये और उसका नाम नारायण सरोवर रखे। इसके बाद वहीं पर विष्णु यज्ञ भी किये। इसके बाद जेतलपुर में दूसरे यज्ञ का आयोजन किये। यह याग अविरत अट्ठारह दिन तक चला। मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी को यह यज्ञ आरम्भ हुआ था। पौष शुक्ल सप्तमी तक चला। देश-देश से संत तथा हरिभक्त आये थे। यज्ञ की भव्यता सुनकर अन्य लोग भी आये थे। यज्ञ सामग्री इतनी अधिक आ गई थी कि रखने की कोई जगह नहीं थीं। श्रीहरि स्वयं गाँव गाँव घूमकर अनाज तथा अन्य सामग्री के लिये प्रेरणा दिये थे। अगल-बगल के गाँवो में गेहूं पीसने के लिये दिया गया था। जेतलपुर की एक गणिका ने श्रीहरि से निवेदन किया कि प्रभु हमें भी कोई सेवा का अवसर दें। उस समय श्रीहरिने उसे गेहूँ को पीसने के लिये दिया था। सभी का कार्य क्षेत्र निश्चित कर दिया गया। पांच हजार ब्राह्मण भोजन परोसने के लिये सेवा में लग गये। संत का मंडल सभी कार्य की देखरेख में लग गया। हरिभक्त सेवा कार्य में लगे थे। वणिक भक्त नाम लिखने में लगे थे। किसान भक्त अपनी बैल गाड़ियों में कुंडी भर-भरकर पानी लाते थे। बढई भक्त मंडप बनाने का कार्य कर रहे थे। बहुत सारी बहनें रात-दिन देखे विना अनाज साफ करने में लगी थी। रसोई में पाकशास्त्री ब्राह्मणोंने लड्डू बनाकर पहाड़ खड़ा कर दिया था। मयाराम भट्ट को सभी के ऊपर नियुक्त किये थे। वे श्रीहरि का संपर्क करके किसी भी समस्या का तुरंत समाधान कर देते थे। कहीं किसी प्रकार की कोई कमी दिखाई नहीं दे रही थी।

जेतलपुर के यज्ञ का डंका चारो तरफ बजने लगा. डभाण गाँव के हरिभक्तों के मन में हुआ कि श्रीहरि हमारे गाँव में भी ऐसी यज्ञ करें। इस भाव से विष्णुदास, रघुनाथरायजी इत्यादि पाटीदार भक्त श्रीहरि से मिलने गये। जाकर कहे हे महाराज जिस प्रकार आप यहाँ यज्ञ किये ऐसा यज्ञ डभाण गाँव में भी करें। महाराज ने कहा जब वहाँ का समय आयेगा तो वहाँ भी करेंगे। आप सबको बतायेंगे। श्रीहरि के ऐसी अहिंसक यज्ञ की चारो तरफ प्रशंसा होने लगी। चारो तरफ कीर्ति फैलने लगी। अनेकों मनुष्य सत्संगी बनने लगे। अन्य धर्म के लोगों में श्रद्धा जगी वे अपना धर्म-आश्रम-संप्रदाय छोड़कर श्री स्वामिनारायण भगवान के अनुयायी बनने लगे। इसका परिणाम पाखंडी, मायावी, प्रपंची लोगों पर पड़ा। उनकी आजीविका पर असर पड़ी। मानसंमान घटने लगा। उनके अनुयायी स्वामिनारायण के होने लगे। सभी विचार किये कि अब तो कुछ करना पड़ेगा। बैठे रहने से काम नहीं चलेगा।

असुरों का समूह एकत्रित हुआ। त्यागी, वैरागी, नागा, अघोर, अवधूत, वामी नामी, हरामी, भूत, भैरव, वीर-महाबीर इत्यादि नानापंथी एकत्रित हुए। अहमदाबाद के बगल में एक बड़ी जन जागृति की सभा किये उसमें घोषड़ा किये कि स्वामिनारायण हमलोगों के नाम शेष करदेगा इसलिये इसके संप्रदाय का नाम शेष करना होगा। जैसे वृक्ष का जीवन मूल होता है मूल का नाश करने से वृक्ष अपने आप नष्ट होजाता है। इसलिये स्वामिनारायण को खतम करना होगा।

वाममार्गियों ने अर्थदास को तैयार किया। वह धन का बड़ा लोभी था। उसे धन देकर कहा कि स्वामिनारायण को मारडालना है। वह गोंसाई युवान था। शक्ति मार्गी था। जेतलपुर गया। उसे बाबा समझ कर सभी सम्मान के साथ रहने की व्यवस्था किये। भोजन करवाये। स्वामिनारायण की हाल-चाल पूछने के लिये उनके पास गया। अतिथि जानकर आदरपूर्वक ले गये। बाद में अन्तर्यामी अनजान बनकर पूछे महापुरुष ! आप कहाँ से आ रहे हैं, आइये बैठिये। किस मठ से आ रहे हैं ? मांस भंक्षण-मदिरापान

करने की छूट कौन शास्त्र देता है। नाना प्रश्न श्रीहरिने पूछा लेकिन एक प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। अपना मान भंग समझकर उठकर के चला गया। महाराज ने कहा अब यह आवे तो इसका विश्वास मत करना। यह कुटिल था। साथ में खंजर छिपाकर लाया था। दूसरे दिन पुनः आया। ऊन की शाल ओढकर आया। छिपाकर तलवार लेकर आया था। बड़ी बेग से श्रीहरि की तरफ आगे बढा। इतने में मूलजीभाई उसे धरदबोचा। उसके हाथ से कटार को खींच लिया। इतने में दूसरे पार्षद भी आ गये। उसे घेर लिये। श्रीहरि दयालु स्वभाव के कारण कहे, मारना नहीं। यही महापुरुष का बड़प्पन है। स्वयं समर्थ होते हुए भी शिक्षा करने के लिये मना कर दिये।

अपमानित होकर गोसांई वापस चला गया। सभी एकत्रित हुए स्वामिनारायण बड़ी-बड़ी यज्ञ करता है इतना पैसा कहाँ से लाता हैं। किसी ने कहा वह भारत के जंगलो में धूमा है। वहाँ से ऐसीजड़ी-बूटी लाया है, उसी का यह प्रताप है। जडी-बूटीयों से जितना चाहे उतना धन प्राप्त कर सकता है। एक दूसरे ने कहा अरे भाई ! स्वामिनारायण पुनः दूसरी यज्ञ करने जा रहा है। सभी मिलकर विचार करने लगे कि इस बार के यज्ञ में इसके यज्ञ को तहसनहस कर देना है, इसे पकड़ भी लेंगे।

श्रीहरि जेतलपुर से सभी दूर देश के संत-हरिक्तों को पत्र लिखे। पत्र में मर्मान्तक बात लिखे। हम यज्ञ करने का विचार कर रहे हैं। यह यज्ञ विशिष्ट प्रकार की होगी। वह हो पायेगी या नहीं, यह ईश्वराधीन है। हमारे जो पक्के हरिभक्त हों वे वैशाख कृष्ण दशमी के आसपास आवें। सभी समूह में आवें। सभी आत्मरक्षार्थ सशस्त्र आवें। दूसरीवात यह कि जिन्हें हमारे वर्तन (विचार) में शंका हो, तर्क-वितर्क वाले हों वे न आवें।

(क्रमशः)

पृष्ठ ८ का चालु...

(१६) वाराह पुराण (१७) विष्णु पुराण (१८) महा भारत।

चार गुण

(१) तमस (२) रजस (३) सत्व (४) शुद्ध सत्व।

चार तप

(१) धर्म (२) भक्ति (३) ज्ञान (४) वैराग्य।

चार भक्त

(१) आर्त (२) अर्थार्थी (३) जिज्ञासु (४) मुमुक्षु।

चार फल

(१) धर्म (२) अर्थ (३) काम (४) मोक्ष।

चार प्रलय

(१) नित्य (२) निमित (३) प्राकृत (४) आत्यंतिक।

पंचकोषात्मक माया

(१) अन्नमय कोष (२) प्राणमय कोष (३) मनोमय कोष (४) विज्ञानमय कोष (५) आनंदमय कोष।

दश अवतार

(१) मत्स्य अवतार (२) कूर्म अवतार (३) वराह अवतार (४) नरसिंह अवतार (५) वामन अवतार (६) परशुराम अवतार (७) राम अवतार (८) बलदेव अवतार (९) कृष्ण अवतार (१०) कल्कि अवतार।

दश महादान

(१) सुवर्ण (२) तिल (३) हाथी (४) दासी (५) रथ (६) पृथ्वी (७) भवन (८) कन्यादान (९) कपिलागाय (१०) सवत्सा गौ।

चन्द्र दिशा

पूर्व : मेष, सिंह, धन
पश्चिम : मिथुन, तुला, कुंभ
उत्तर : कर्क, वृश्चिक, मीन
दक्षिण : वृषभ, कन्या, मकर

काल का वास

रविवार : उत्तर दिशा
सोमवार : वायव्य कोण
मंगलवार : पश्चिम दिशा
बुधवार : नैऋत्य कोण
गुरुवार : दक्षिण दिशा
शुक्रवार : अग्नि कोण
शनिवार : पूर्व दिशा



सत्संग सुरभि

"मैं तो आप में अखंड रहता हूँ"

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

श्री सहजानंद स्वामी जब सभा में विराजमान होते तो हाथ में रुद्राक्ष के बड़े मनकों की माला रखते । महाराज उस माला को फिराते रहते, जब कोई भूल से भी सभा में तन्द्रा-झोला खाता तो उसे महाराज उसी माला से द्युट्टा मारते ।

एकबार सभा में ब्रह्मानंद स्वामी को अचानक झोला आ गया तो महाराजने उन्हें माला से मारा । स्वामी तो एकाएक जाग गये और महाराज से कहने लगे, "महाराज ! आपने माला से मुझे क्यों मारा ? मैं सो नही रहा था ।" महाराजने कहा : "तो आप क्या कर रहे थे ?" ब्रह्मानंद स्वामीने कहा : "मैं तो मन में आपकी मनोहर मूर्ति का ध्यान करके कविता बना रहा था ।" तो सुनाइये आप अपनी कविता ।" महाराजने आज्ञा की ।

ब्रह्मानंद स्वामी शीघ्र कवि थे । आज उन्हे महाराज की प्रेरणा मिल गयी । श्रीजी महाराज सुन्दर पगड़ी धारण किये हुए थे, जिसमें अजब की कलंगी शोभित हो रही थी । चारो तरफ मोती की लर लटक रही थी । गले ताजे गुलाब का हार पहने हुए थे । स्वामी महाराज की ऐसी लुभावनी मूर्ति में डूब गये और खड़े होकर सुन्दर कविता की वरसात करने लगे ।

तारो चटक रंगीलो छेडलो, अलबेला रे ।
कांई नवी कसुंबी पाघ, रंगना रेला रे ॥

इतनी दो कड़ी की कविता सुनकर सम्पूर्ण सभा रंग में आ गयी । श्रीहरि के मनोहर स्वरुप की झांकी करने वाली इस कविता को सुनकर सम्पूर्ण सभा झूम उठी ।

तारी पाघलडीना पेच मां अलबेला रे ।
मारुं चितडुं थयु चकचूर रंगना रेला रे ॥
ब्रह्मानंद कहे तारी मूरति अलबेला रे ।
पण दीठे घेली तूर .... रंगना रेला रे ॥

समग्र सभा श्रीहरि की मूर्ति में डूब गयी । श्रीजी महाराज की प्रसन्नता का पार ही नही रहा । स्वामी ! आज मेरी माला गलत जगह लग गयी । आप तो आँख बन्द करके मेरे स्वरुप में आनंद ले रहे थे ।" श्रीहरिने सुंदर प्रमाण स्वामी को अर्पण किया ।

स्वामी में कविता करने की अद्‌भुत शक्ति तो थी ही लेकिन इसके अलावा अन्य कला थी, जिसे श्रीजी महाराज ने पहचान लिया था । जिस प्रकार जौहरी हीरा को पहचान जाता है ठीक ऐसे ही । मंदिरो के निर्माण कार्य में भी स्वामी बड़े कुशल थे । बातचीत की कला भी अद्‌भुत थी, किसी को भी मात कर देते थे । स्वामी अश्व विद्या में भी कुशळ थे । गोरा अमलदार का घोड़ा बिमार हुआ, कोई ठीक नहीं कर सका तो स्वामी उस घोड़े को अच्छा कर दिये । डनलोप साहब ने श्रीजी महाराज को अहमदाबाद में जितनी जमीन चाहिये उतनी देंगे ऐसा कह दिया । लेकिन सरकारी जमीन जो पाठक वाडी की थी उसे प्राप्त करने के लिये ब्रह्मानंद स्वामी का पुरुषार्थ काम किया ।

श्रीजी महाराज ने वड़ताल, जूनागढ तथा मूली के शिखरी मंदिरोका काम स्वामी को सौंपा था । वड़ताल में श्री लक्ष्मीनारायणदेव का शिखरी मंदिर बनाना था, लेकिन स्वामी के पास मात्र बारह रुपये थे । एक ही शिखर का मंदिर बनाना होता तो खर्च कम आता लेकिन तीन-तीन शिखर का मंदिर बनवाना था, फिर भी महाराज ब्रह्मानंद स्वामी की महिमा को जातने थे । इसलिये निश्चित किये थे कि तीन शिखर का ही होना चाहिये ।

यह ध्यान में रखकर स्वामीने तीन शिखर वाले मंदिर का पाया खोदवाया । महाराज यह जान गये कि बड़े मंदिर का विचार स्वामी का हो गया है, फिर भी एक पत्र लिखे कि "तेता

पांव पसारिये जितनी लंबी सोड'' स्वामी तो महाराज जैसे शेठ मिले हैं तो क्या विचार करना। स्वामी तुरंत पत्र लिखे -

साहेब सरिखो शेढ़ियो वसे नग्र के मांही ।
ताके तन की क्या कमी, जाकी हुंडी चले नयखंड मांहि ॥

वड़ताल में रहकर चुन्ना की चक्की चलाकर स्वामी अनगिनत काव्यों की रचना किये। वड़ताल मंदिर का काम पूर्ण हुआ कि स्वामी कंधे पर झोली लटका कर महाराज की आज्ञानुसार निकल पड़े। अब जूनागढ में मंदिर निर्माण हेतु स्वामी को प्रेषित किये।

जूनागढ में नवाब का राज्य था। नवाब का कर्मचारी जमीन के लिये विघ्न उपस्थित कर रहा था। परंतु ब्रह्मानंद स्वामी की प्रतिभा से नवाब इतना प्रभावित हुआ कि उसने मंदिर के लिये जमीन भेंट में दे दी। इतना ही नहीं स्वामी को राजदरबार में बुलाकर सोना-मोहर तथा अन्य अलंकारो से सम्मानित किया। लेकिन स्वामी ने उस संमान को स्वीकार करके वापस कर दिया। बाद में वहीं पर कविता बनाकर सभा में सुनाया -

राजी रहिए राम से, दाम वाम से दूर।
पीया प्याला प्रेम का मतवाला मगरुर ॥
एक गुरु का आशरा, एक गुरुकी आश।
तीन से राजी रहिए, औरत से उदास ॥
सोई फक्कड फकीर है, सुने गुरु आदेश।
श्रीरंग समझे सान से, वो सच्चा दरवेश ॥

इस काव्य में कविने संत फकीर कैसा होना चाहिये वह बताया है। कवि समझाते हुए कह रहे कि ''जो रामजी से प्रसन्न रहे तथा दाम (धन) एवं वाम (स्त्री) से दूर रहे, तो प्रभु के प्रेम का प्याला पीकर मस्त-मगरुर बना रहता हो, जिसे मात्र एक ही गुरु का आशरा है, जो केवल गुरु से ही प्रसन्न रहता हो, तथा दूसरे को देखकर उदास होता हो, जो गुरु की आज्ञा में रहता हो, वही सच्चा फकीर है।''

ब्रह्मानंद स्वामी का एक नाम श्रीरंगदास था जो इस कविता में उल्लिखित है।

इस पद को सुनकर नवाब इतना खुश हो गया कि कहने लगा, वाह ! इसी को फकीर कहते हैं ! जिसे धन स्त्री की जरुरत नही है ऐसा फकीर आज मैंने देखा। जूनागढ में भी बड़ा शिखरी मंदिर का निर्माण स्वामी ने करवाया।

सूरत के मुनि बाबा एक महान समर्थ विद्वान थे। स्वामी उन्हें सत्संग की महिमा समझाकर सत्संगी बनाये थे। सुरत के पारसी अरदेशर कोतवाल भी ब्रह्मानंद स्वामी की प्रेरणा से श्रीजी महाराज के परम भक्त बन गये थे। साधारण मनुष्य से यह कार्य संभव नही था। इसीलिये महाराज कहते है कि ब्रह्मानंद स्वामी गजेन्द्र जैसे है। जब हाथी पागल हो जाता है तो स्वामी जैसे गजेन्द्र की आवश्यकता होती है। अर्थात् मुनीबाबा जैसे हाथी को ब्रह्म मुनि जैसा गजेन्द्र ही सत्संग में ला सकता है।

ब्रह्मानंद स्वामी श्रीजी महाराज के शिष्य तो थे ही लेकिन वे आनंद की बात कहकर, कीर्तन सुनाकर महाराज को हंसाते रहते थे। महाराज की लीलाओं से सम्पृक्त असंख्य पद लिखते थे। महाराज ने एक वार स्वामी से पूछा - 'स्वामी आप को ऐसा लिखने एवं गाने के लिये किसने कहा ?'

ब्रह्मानंद स्वामी ने तुरंत कहा कि कौन कहेगा ? जैसा मैंने देखा वैसा लिखा और गाया। स्वामी आपने हमें जिस रुप में देखा हैं वैसा समझा है, वैसा ही कीर्तनो में गाया है।

श्रीजी महाराज का यह दूसरा प्रमाण पत्र था।

अंत में श्रीजी महाराज ने जब देहत्याग करके स्वधाम जाने की इच्छा व्यक्त किया उस समय ब्रह्मानंद स्वामी बहुत उदास हो गये। आँखो से अश्रुधारा बहने लगी। इस दृश्य पर उन्होंने लिखा है -

ब्रह्मानंद ना बाल सनेहीडा ।
राखू जोर करी, नहीं दउं जवा ॥

श्रीजी महाराज को हुआ कि श्रीराम के जैसे हनुमान थे वैसे हमारे ये यति हनुमान है। ये हमें इस समय जाने नहीं देंगे। इसलिये स्वामी को जूनागढ मंदिर का कार्य करने की आज्ञा की।

महाराज का साथ छोड़कर जाने की इच्छा स्वामी की नहीं थी। परंतु ''महाराज की आज्ञा ही जीवन'' इसलिये वे जाने के लिये तैयार हो गये। प्रसन्न होकर महाराज उन्हें गले से लगा लिये। इसतरह तीन दिन निकल गये। चौथे दिन स्वामी जूनागढ के लिये निकले।



सत्संग भालपाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

बजड़ी की रोटी से कल्याण

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

एक बार ब्रह्मानंद स्वामी भूखे थे। गाँव-गाँव सत्संग प्रचार के लिये विचरण कर रहे थे। उसी समय दशमी के दिन ठाकुरजी के प्रसाद की व्यवस्था न हो सकी। दूसरे दिन एकादशी का उपवास था। द्वादशी के दिन भूखे पेट संत चल दिये। खूब थके हुए थे। भादों की धूप से सभी परेशान थे। इसलिये खेत में एक वृक्ष के नीचे विश्राम के लिये बैठ गये। एक बालक खेत की रखवाली कर रहा था। पत्थर मारकर पक्षियों को उड़ी रहा था। उसी समय इन दो महात्माओं को देखा। पूर्वजन्म के संस्कार अच्छे थे। इसलिये संतो के पास आकर पूछा स्वामीजी ? पोंक (गेहूं की बनी मिठाई) खायेंगे ? स्वामीजी को ऐसा हुआ कि हरि की इच्छा से ही यह निमंत्रण मिल रहा है, आज तीन दिन तो हो गया उपवास के। ठीक है। ले आओ ठाकुरजी का भोग लगाकर संत खाने लगे। वह बालक चालाक था उसे ख्याल आ गया कि संत भूखे है, अन्यथा इतनी तेज गति से प्रसाद ग्रहण नहीं करते। उस बालक ने पूछा महाराज। आप लोग रोटी खायेंगे क्या ? ब्रह्मानंद स्वामी विचार करने लगे कि, इस बालक के भीतर भगवान ही बोल रहे हैं। क्योंकि इस बालक को कैसे ख्याल आया कि हम भूखें हैं और इतनी मिठाई से क्या पेट भर जायेगा ? स्वामीजीने पूछा रोटी यहाँ कहाँ से आयेगी ? हाँ हमारे पास है। तुरंत उसने वस्त्र में लपेटी रोटी निकालकर रख दी और कहा कि लो महात्माजी ग्रहण करो। लेकिन बालक ! तूँ क्या खायेगा ? अरे मैं किसान का बेटा हूं। मेरा घर भी दूर नहीं है। एक दौड़ में ही घर से जाकर रोटी ले जाऊँगा। वैसे किसान के बालक स्वस्थ एवं मजबूत होते है। यह बालक भी ऐसा ही था। प्रातः जल्दी उठना, खेत में जाना, अन्य कठिन से कठिन काम करना इनकी जेहन में होता है। अब दोनो संत एक-एक रोटी खाये। खाकर इतना प्रसन्न हुए कि कोई सीमा न रही, वह इसलिये कि दो दिन बाद यह भोजन मिला था और भूखे थे। संतो को हुआ कि यह बालक हमें भोजन कराया तथा भोला भी है, इसे कुछ देना चाहिये, इसलिये बालक से पूछे, बोल तुझे क्या चाहिये। बालक ने कहा आपके पास क्या होगा जो देंगे। वह अन्य साधुओं की तरह समझ रहा था। बाबा लोगों के पास होता ही क्या है ? खाने को नहीं मिलता तो बाबा हो जाते हैं। बालक ने कहा आप के पास क्या है ?

ब्रह्मानंद स्वामी विचार करने लगे कि इस बालक को यह ख्याल नहीं कि हमारे पास क्या है ? लेकिन उन्होंने कहा कि बेटा तूं एक काम कर मेरे पेट को देख। स्वामी अपने पेट को बताये। स्वामी का पेट बड़ा था। इस पेट की याद रखना कि इस पेट में तूने रोटी डाली है, अर्थात् इस बड़े पेटवाले स्वामी को भोजन कराया है। इतना कहकर संत वहाँ से निकल गये। बालक को याद हो गया कि किसी बड़े पेट वाले बाबा को भोजन कराया है। लेकिन पेट क्यों दिखाये। इस पेट में तूने रोटी रखी है। जब आप सभी अच्छी बैंक में पैसे डिपोजिट करते हैं तो उसका डबल होकर मिलता है, लेकिन ऐसी तैसी बैंक में रखने से मूल भी चला जाता है। अर्थात् संतो का पेट सरकारी बैंक जैसा है।

संत तो चले गये लेकिन बालक के मन में आश्चर्य की तरंग उठती रही। पेट की याद करने को कह गये। अब वहरात दिन पेट की ही याद करता। खेत से घर गया और अपनी मां से सभी बातें कह सुनाया। पहले से ही (जब बालक पैदा होता है तब से) बालक के मुख से माँ शब्द निकलता है। इसलिये वह मधुर शब्द

बाद में भी माँ के लिये ही होता है। ईश्वर को भी माँ कहा जाता है "त्वमेव माता पिता त्वमेव"। ईश्वर भी माँ है। ईश्वर बाप है। माँ ईश्वर की प्रतिनिधिहैं। इसलिये ईश्वर के बाद माँ को माँ की संज्ञा दीजाती है। यह अमृत शब्द है। लेकिन मनुष्य इस अमृतशब्द को छोड़दिया और बाहर के मनगढंत शब्दों को बालक के मुख से कहवाने लगा। लेकिन वह अनपढ किसान का बालक अपनी माँ से कहा कि माँ ? आज खेत में दो बड़े पेट वाले साधु आये थे। तो क्या ? वे खूब भूखे थे। मैंने उन्हें अपनी रोटी खिला दी। बेटा साधुओं का विश्वास नहीं करना चाहिये, वे लोग उठा लेजाते हैं। लेकिन माँ ! वे लोग ऐसे नहीं थे। वे लोग प्रसन्न होगये। मुझे आशीर्वाद देकर गये और अपना पेट बताकर कहे कि इस पेट की याद रखना, तूने रोटी खिलाई है।

समय बीत गया। एक समय का वह बालक आज ८० वर्ष का हो गया। मृत्यु नजदीक आई। उस समय ब्रह्मानंद स्वामीने उसे दर्शन दिया : हाथ में रोटी। जय स्वामिनारायण। चल भगवान के धाम में उस जीव का मोक्ष हो गया।

हरिगीता में श्रीहरि भक्तिमाता को सम्बोधित करके कहते हैं कि माँ ऐसे ब्रह्मनिष्ठ संतो को खिलाने से या इतनी सेवा करने से इनकी आज्ञा में रहकर परमात्मा को भजन-भक्ति करने से जन्म-जन्मान्तर के पाप जल जाते हैं और माया के बन्धन से मुक्त होकर परमपद को प्राप्त करते है।

•

परम भक्ति किसे कहा जाय ?

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

हे भगवान ! यह क्या ? आप मेरे सामने प्रगट खड़े है ? पूजारी के आश्चर्य की सीमा ही न रही। पुजारी खुश हो गया कि मेरी भक्ति सार्थक हो गई जो भगवान प्रत्यक्ष दर्शन दिये।

उस भगवान ने कहा कि हम अपने भक्त के लिये सदा प्रगट ही रहते हैं। कपटी, दंभी, पाखंडी, स्वार्थी से लाखों कोश दूर रहता हूँ। हे भगवान आप किस पर प्रसन्न होते हैं तथा आप का परम भक्त कौन है। हम आपके परम भक्त को देखना चाहते हैं। इस जगत में ऐसे भक्तों को कैसे पहचाना जा सकता है।

भगवान पुजारी की बात सुनकर उसे एक पीतल की थाली देकर कहे कि जिसके स्पर्श मात्र से यह थाली सोने की हो जायेगी वह मेरा परम भक्त है। बाद में इस बात की घोषड़ा की गई कि जो परम भक्त हो वह इस थाली का स्पर्श करे। जिसके स्पर्श से यह सोने की थाली हो जायेगी वही परम भक्त है। भगवान ने उसे ही भक्त स्वीकार किया है।

मित्रो ! किसके हाथ से सोने की थाली होगी। यह विचार करने लायक है। प्रथम राजा उस थाली का स्पर्श करने आता है। वह इसलिये कि - मैने बहुत सारे अच्छे काम किये है। नगर में बावली बनवाई है। बांधबनवाया है। किला बनवाया है। ब्राह्मणो को खूब दान दिया है। मैं यथार्थ भक्त हूँ। ऐसा विचार कर थाली को हाथ लगाया लेकिन कुछ नहीं हुआ। कारण यह कि उसने प्रजा पर कर अधिक लगा दिया था, प्रजा त्राहिमां हो गई थी, तो सोना कहा से हो।

इसके बाद तो बड़े-बडे शेठ भी आये, पंडित आये, अमीर-गरीब सभी उस थाली का स्पर्श किये लेकिन कुछ नहीं हुआ। उसी सयम एक सामान्य व्यक्ति जो माटी का काम करने वाला था वह आया। सभी को हुआ कि यह क्या करेगा यह कौन सा पुण्यात्मा है। लेकिन उस किसान का जीवन निर्दोष था। इस वात को कोई समझा नहीं और मश्करी करने लगे। फिर भी परमात्मा का ध्यान करके आत्म विश्वास पूर्वक ज्योंहि थाली का स्पर्श किया त्यौंही वह थाली सोने की हो गई। सभी के आश्चर्य की सीमा न रही। पुजारी यह घोषड़ा की कि यही भगवान का प्रिय भक्त है। भगवान प्रगट होकर उस भक्तको हार पहनाये।

मित्रों ! इस कहानी का रहस्य अच्छा है। इसे हृदय से विचारेगे तो ही ख्याल आयेगा कि भगवान की गणित भिन्न प्रकार की है। संसार जिसे बड़ा भक्त मानता होगा वह भगवान की दृष्टि में छोटा है। जिसे संसार छोटा समझता है वह सायद भगवान की दृष्टि में बड़ा भक्त हो। वचनामृत में श्रीहरिने कहा है कि जो सम्पूर्णमान का त्याग करके मेरी भजन करता है वही बड़ा भक्त है।

इसलिये अपने कार्य में, निष्ठापूर्वक भजन करने से भगवान प्रसन्न होते है। सच्चे भक्त के रुप में भगवान स्वीकार करें तो अपना कार्य हो जाय।



भक्ति सुधा

वखतमाँ की शूरवीरता

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला (अमदावाद)

श्रीहरि एक समय अहमदाबाद पधारे थे, उस मसय वे खोखरा मेहमदावाद में नाथूभक्त के यहाँ निवास किये। असुरों को पता चला कि महाराज यहाँ आये हुए हैं। इसलिये मारने के लिये एकत्रित हुए। महाराज की रक्षा के लिये हथियार धारी पार्षद भी युद्ध के लिए निकल पड़े। घमासान युद्ध हुआ। श्रीहरि की इच्छा से बहुत सारे असुरों का नाश हुआ।

यह कार्य पूर्ण करके महाराज वहेलाल पधारे। वहेलाल गाँव के जेसिंगभाई पटेल खूब शूरवीर तथा महाराज के अनन्य निष्ठावाले थे। महाराज जब जेसिंह के घर पधारे उस समय जेसिंह कहीं बाहर गये थे। उनकी बहन बखत माँ घर में थी।

महाराज आकर दरवाजा खटखटाये। बखत माँ दरवाजा खोली, देखा तो महाराज पसीने से लथपथ घबड़ाये हुए लग रहे थे। महाराज ने पूछा घर में कोई नहीं है क्यां ?

"महाराज ! भाई खेत में गये हैं।"

तो हम चले जा रहे हैं। लेकिन प्रभु क्यों ऐसा ?

हम तो हैं न ?"हमारे पीछे सेना पड़ी है हमें पकड़ने के लिये।" तो आप घर में आराम कीजिये हम हैं न ? मैं गाँव के बाहर जाती हूं और देखती हूँ कि कौन इस गाँव में पग रखता है।

इतना कहकर माणकी घोड़ी को छिपाने के लिये घर में लेजाकर बांधदी। महाराज को अन्दर खाट पर विराजमान करके घड़े मे से जल अर्पण कीं। बाद में अपनी साड़ी के पल्लू को कसकर बांधी और हाथ में मूसल लेकर निकल पड़ी। महाराज बा की शूरवीरता को देखते ही रहे। गाँव के बाहर से कोई भी आवे तो, एक-एक करके हम सभी को देखलेंगी।

वखतमाँ इस तरह तैयार होकर गाँव के बाहर खड़ी थी। इतने में जेसिंहभाई वहाँ आगये।

बहन यह क्यां ? क्यों कछाण मारकर मूसल लेकर खड़ी हो। अरे ! महाराज को पकड़ने के लिये सेना आ रही हैं। महाराज को मैं अपने घर में बैठाकर आई हूँ।

बहन ! कोई नहीं आ रहा हैं ? मैं उसी तरफ से आरहा हूँ। चलो वापस घर चला, महाराज प्रतीक्षा करते होंगे।

भाई बहन दोनो घर आये। जेसिंग महाराज को प्रणाम करके पूछे महाराज ! यह सब क्या है ? आप यदि आज्ञा करें तो अभी दश हजार हथियार धारी सैनिक एकत्रित करदें। आपकी कृपा से इतनी पहचान तो है। बस आप आज्ञा करें।

जेसिंगभाई हाथ जोड़कर खड़े रहे। साथ में वखत मां भी खड़ी थी। अभी भी उस मां के मुख से शूरवीरता की खुनस उतरी नहीं थी।

अंत में श्रीजी महाराज हंसते हुए बोले जेसींगभाई ? कोई नहीं आ रहा है, हम आपकी परीक्षा कर रहे थे।

तो ठीक महाराज ! हमें अब शांति हुई। इतने में वखत माँ ने कहा महाराज ! जब आप यहाँ आये है तो भोजन करके जाइयेगा।

वखत माँ की शूरवीरता से महाराज बहुत प्रसंन हुए। और कहने लगे, वखत माँ हमें बहुत भूख लगी है, इस लिये भोजन जल्दी तैयार करो। भोजन तैयार हुआ। महाराज प्रेमपूर्वक वखत माँ का बनाया भोजन किये और अवशिष्ट भाई बहन को प्रसाद के रुप में देकर विदा लिये। जेसींगभाई महाराज के साथ गाँव के बाहर तक गये। वखतमाँ महाराज जबतक आखों से ओझल नहीं हुए तब तक देखती रहीं।

वाह प्रभु ! आपकी लीला कौन जान सकता है। प्रस्वेद विंदुओं से सुशोभित उस मुख को हम कैसे भूल सकती है। मन ही मन ऐसा विचार करती हुई वखत माँ ओसारी से तब तक देखती

रही जब तक मांणकी असवार प्रभु का दर्शन होता रहा।

ऐसी शूरवीरता थी वखत माँ। वखत माँ की प्रत्यक्षता का उदाहरण आज भी वह मुसल वहेलाल गाँव में है।

शुद्धदान की महिमा

- भगवतीबहन के. सौनी (पाटण उ.गु.)

गाँव हामापर मे आहिर करशन बामणिया हरिजन रहता से। वह बजडी को खेती किया था। उसे नीलगाय खाजाती थी। जिसकी चिंता में रात्रि में नींद नहीं आती थी। उसे एक रात्रि में श्रीजी महाराज ने दर्शन दिया और कहा कि हे भक्त। तूं किस चिंता में हैं ?'' ''तब भक्तने कहा हे महाराज ! नीलगाय प्रतिदिन बाजडी खाजाती है उसी कि चिंता है।'' तब महाराजने कहा ''आप घर जाकर सो जाईए। आपके जगह हम जग जाते हैं। हम माणकी उपर चढकर आपके खेते में घूमेंगे।'' तब वह भक्त घर जाकर सो गया। सुबह खेत में जाकर देखा तो खेत के आसपास माणकी घोडी के पैंरो के निशान देखकर ज्ञात हुआ की ''श्रीजी महाराजने रात में खबर निकाली है।''

वैसे भी रोज श्रीजी महाराज ने उनके खेंतो की खबर निकाल ते थे। क्योंकि करशन भक्त अपनी कमाई का वींसवाँ हिस्सा निकालकर जुनागढ भेंजते थे। इसी तरह आप भी भगवान का भाग निकालते हो तो उसकी खबर तो भगवान को रखनी ही पडती है।

सभी हरिभक्त को यह ज्ञात होना ही चाहिए की उन्हें अपनी आवक में से दसवाँ हिस्सा भगवान को अर्पित कर देना चाहिए।

श्रीजी महाराज के लीलाचरित्र की महिमा

- कंचनबहन रणछोडभाई पटेल (नारणपुरा)

एक समय आदि आचार्यश्री रघुवीरजी महाराजने स.गु. श्री गुणातीतानंद स्वामी को प्रश्न पूछा कि हे स्वामी, श्रीजी महाराज के लीलाचरित्रो की महिमा को किस प्रकार समझने में क्या फल मिलता है वह आप मुझे कृपा करके बताईये, तबा स्वमी बोले।

हे रघुवीरजी महाराजश्री, पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण स्वयं इस ब्रह्मांड में प्रगट हुए तब से लेकर अंतर्ध्यान हुए तब तक के प्रभु के लीलाचरित्र को गाने से तथा सुनने से यह जीवन माया भाव ने मुक्त होकर निर्गुण भाव को प्राप्त करता है। श्रीजी महाराज के लीलाचरित्र का श्रवण करना तथा करवाना उसी में मनुष्य देह की सार्थकता है। ब्रह्म भाव को प्राप्त करके श्रीजी महाराज के लीला चरित्र गाने चाहिए। श्रीजी महाराज के लीलाचरित्र स्वंय सुने तथा दूसरों को भी सनाये तथा श्रीजी महाराज का ध्यान करे तो परम शांति की प्राप्ति होती है।

मुक्तानंद स्वामी ने शांति प्राप्त करने का उपाय श्रीजी महाराज ने पूछा तो उन्होंने कहा कि हमारे लीलाचरित्रो का गान करने से शांति मिलती है। एकबार स्वरुपानंद स्वामी के देह में जलन होने लगी तथा दादा खाचर के कक्ष के मिट्टी के निलयों को देखा और इस देह को मैंने व्यर्थ करने के लिये नहीं धारण किया है, मैंने तो प्रभु की भजन करने हेतु वेश धारण किया है। अगर प्रभु मुझे प्रगट रुप में नही मिले तो मेरा जीवन जहर समान हो गया है। इस प्रकार वे १२ वर्ष के हो गये तब एक दिन मंदिर में से ऐसी दैवी अवाज आयी कि हे संगा, तुझे मरने की कोई जरुरत नही है, क्योंकि कुछ ही दिनो में प्रगट भगवान मिलने वाले है। इस आकाशवाणी को सुनकर संगो प्रसन्न हो गया।

प्रगट प्रभु की राह देखने लगा। इस प्रकार वह १५ वर्ष का हो गया। अपने मित्रों के साथ गढपुर जाने के लिये तैयार हो गया क्योंकि श्रीजी महाराजने संगा को स्वप्न में दर्शन दिया था। गढपुर में मित्रों के साथ पहुँच ते ही स्वामिनारायण प्रभु को देखकर अत्यंत आनंद विभोर हो गया। तथा निश्चय कर लिया की अब मुझे घर ही नहीं जाना। परंतु दश ही दिवस में मित्रोंने जाने कि जिद की। परंतु संगा को सभी कुछ यही मिल गया था। परंतु श्रीजी महाराजने कहा कि भगत घर जाइए आपको हम फिर से बुलायेंगे। महाराजकी आज्ञा होने के कारण वे घर वापस चले गये। परंतु उनका मन उसमें लगा ही नहीं। एक दिन अपने चाचा के फल-फूल के बगीचे में गये और कहा कि स्वामिनारायण भगवान ही वास्तविक भगवान है। और संगा ने गढपुर की राह पकड ली। वहाँ जाकर प्रभु के चरणों में मस्तक झुकाया। प्रभु मैं आपका ही हूँ और आप मुझे सदैव के लिये उसमें से आनेवाले तेज में से मूर्ति का आकार देखकर उनके शरीर की गलन कम हो गई और शांति प्राप्त हुई। इसलिये वे श्रीजी महाराज को साकार मानने लगे।

इस भरतखंड में श्रीजी महाराज ने प्रगटरुप से लीला की है। जो लिखने बैठें तो उसका कोई अंत नही है। श्रीजी महाराज ने कहा कि हम जो भी उत्सव करते है उसका एकमात्र उद्देश्य जीव का परम कल्यण करना ही। श्रीहरि के लीला चरित्र परम कल्याणकारी है तथा निर्गुण है। इसलिए उन्हें अंतर में रखकर विचार स्मरण करना चाहिए। नंद-संतो के कीर्तन, श्रीजी महाराज के लीला चरित्रों के प्रसंग-प्रसंग पर आधारित होते है। इसलिए ऐसे कीर्तन बह के मंडल में गाने चाहिए ऐसी प.पू.अ.सा. गादीवालाकी आज्ञा है।

•

सिद्धानंद स्वामी

- मंगुबहन प्रहलादभाई पटेल (जीवराजबार्क)

पाटण जिल्ला के हारिज तथा सभी के बीच में तीन हजार बस्ती वाला मंपुर नामक गाँव है। वहाँ लेउवा पटेल के यहाँ एक महामुक्त वाबल का जन्म हुआ था जिसका नाम संगो रखा था। संगो बचपन से संस्कारी तथा भगवत पारायण था। गाँव में एक शिवालय मंदिर था उसी मदिर में जाते और वहाँ बैठकर रोते थे तता ऐसा बोलते रहते थे कि अपना करके ही रखना। श्रीजी महाराज ने सच्चिदानंद स्वामी के साथ उन्हें जोड़ दिया। तथा खेतीबाडी का काम सोंप दिया। स्वामी के साथ रहकर ध्यान करना शीखा। रोज बगीचे में से फल,फूल, सब्जी तोड़कर महाराज को लाकर देते थे। और मन में यह संकल्प करते जाते थे कि महाराज ऊँचे आवाज से बोलेंगे कि, सांगा मेरे लिये वाडी से क्या-क्या लाये हो ? ऐसा जब महाराज मुझसे कहेंगे तो मैं अति प्रसन्न हो जाऊँगा। उसी समय चतुर्मास का प्रारंभ हुआ। सच्चिानंद स्वामी ने अपने संकल्प संगा को बताया कि मैं समग्र चातुर्मास में अनिंद्रा का व्रत लेना चाहता हूँ। तब संगाने सोचा कि मेरे गुरु इतना कठिन नियम लेंगे तो मुझे भी हिंमत करके कठिन नियम लेना ही चाहिए ।महाराजने संगा का संकल्प जानलिया और कहा कठिन में कठिन संकल्प हमारे स्वरुप में अखंड वृत्ति रखना है। उससे कठिन कोई नियम नहीं है। और ऐसा नियम जो रखता है उसकी मैं रक्षा करता हूँ। सगा भगतने चौवीस घंटे तक तैल धारावत मूर्ति में अखंड वृति रखी तथा उन्हें महाराज का स्वरुप दिखने लगा। संगा भगतने महाराजकी भी बहुत सेवा की। रामप्रतापभाई तथा बडताल में भी सेवा की। उसके बाद गढडाकी गाँव में वे आंबा शेठ के यहाँ रुके। वहाँ उन्होंने दो दिन तक कुछ नहीं खाया। मुक्तानंद स्वामी ने महाराज को बताया तो महाराजने संगा को पूछा कि "संगा भगत आप दो दिनों से भोजन क्यों नही कर रहें ?" तो संगा भगतने कोई जवाब नहीं दिया। परंतु मुक्तानंद स्वमी ने कहा कि महाराज संगा भगतने बहुत सेवा की है। उन्होंने कहा कि संगा को साधु बनाने का वक्त आ गया है। महाराजने दीक्षा देकर कहा संगा भगतने तो पहले से ही मूर्ति सिद्ध की है। इसीलिये उनका नाम सिद्धानंद स्वामी रख दिया। धन्य है सिद्धानंद स्वामी के चरणों में कोटी कोटी वंदन।

कुछ ही दिनों में ऐसा समाचार आया कि श्रीजी महाराज अक्षरवासी हो गये तो स्वामी दौडते-दौडते गढड़ा आये तब तक को अग्निसंस्कार की विधिभी पूर्ण हो गयी थे। स्वामीने कहा कि, "दहन क्रिया नहीं पूर्ण हुई होती तो उसी देह में उनको पुनः बुलाते, परंतु अब क्या हो सकता हैं ?"

स्वामी तो गढड़ा के गोपीनाथजी मंदिर में जाकर असह्य वेदना के साथ रोने लगे। स्वामी की वेदना के भाव को देखकर श्रीजी महाराज गोपीनाथजी की मूर्ति में से निकले और स्वामी को भेट कर आश्वासन देने लगे कि "आप तो ब्रह्मकवि हो। शोक मत कर करिये। आप को ऐसा शोक शोभा नही देता। मैं तो आपके रुम में ही अखंड बसता हूँ।"

महाराज की शीतल वाणी सुनकर स्वामी का शोक कुछ कम हुआ। महाराज स्वधाम पधारे उसके बाद पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजकी आज्ञा से मूली मंदिर में अंतिम आयु पूर्ण करके सं. १८८९ के ज्येष्ठ सुद-१० को वे भी अक्षरनिवासी हो गये।

मूली मंदिर में ही स्वामी की जीवनलीला समाप्त हो गयी। देह छोडते समय स्वामीने गाया था कि,

"मेहर करीने मावजी, तेडी लेजो तम पास।"

मूली मंदिर में उनका स्मारक है जिसे ब्रह्म महोल कहते हैं। महाराजने उनको ब्रह्मकवि की उपमा प्रदान की थी। वह सार्थक ही थी। क्योंकि श्रीहरि इस यति समान स्वामी मं सदैव बिराजमान ही रहे।"

??? प्रश्न पेटी ???



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ सभी साधन की अपेक्षा बड़ा साधन कौन ?

प्रश्न : २ मोह के उदय का क्या कारण है ?

प्रश्न : ३ सभी पापों में बड़ा पाप क्या है ?

प्रश्न : ४ इन्द्रिय तथा मन किस साधन से जीता जा सकता है ?

प्रश्न : ५ कौन सा ग्रन्थ सम्प्रदाय की पुष्टि करता है ?

प्रश्न : ६ भगवान का भक्त किसे कहा जाय ?

प्रश्न : ७ भक्त के ऊपर भगवान कब प्रसन्न होते हैं ?

मार्च २००८ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) जिस शस्त्र में श्रीकृष्ण भगवान तथा वाराहादिक भगवान के अवतारों की युक्ति पूर्वक कोई खंडन करता हो ऐसा जो शास्त्र उसे कभी सुनना नहीं तथा मानना नहीं (शि.पत्री २९) (२) स.गु. भगवदानंद स्वामी-कारीयाणी-२ । (३) जोबनपगी । (४) "सारंगपुर में अंतकाल के समय कोई यमदूत लेने नहीं आते ।"

(५) स.गु. निष्कुलानंद स्वामी । (६) "जिसने भेस धारण किया उसमे भगवान आजाते हैं । जिसने भेस धारण किये वे सभी भगवान । (७) श्लोक २१४, १००० नाम ग्रन्थ कर्ता शतानंद स्वामी ।

१. अंजनाबहन - नांदोल
२. साकरबहन, कैलास बहन - नांदोल
३. करशनभाई जोईताराम - कोठीवाला
४. परमार भानुबहन - बोडका
५. नीता बहन भावेश टांक
६. मंजुबहन - मोरसीया (रतनपर)
७. चंद्रिकाबहन, प्रगतिबहन टांक - जीरागढ
८. मनाणी पुष्पा
९. अमरशीभाई - विठ्ठलापरा
१०. प्रफुलाबहन एस. पटेल - उवारसद
११. बाईयों का स्वा. मंदिर - मोखासण
१२. हार्द, हेली, किरीटभाई पटेल
१३. बी.पी. भावसार - अहमदाबाद
१४. पटेल विष्णुभाई जीवाभाई - सीतापुर
१५. चोटलीया पुष्पा, मनीष तथा रंजन - धूलकोट
१६. परमार भानुबहन भगवानजीभाई - बोडका
१७. सुभद्राबहन रमेशभाई - कनीपुर
१८. देवीबहन एस. दबासीया - मीरझापर-कच्छ
१९. विनोदभाई पटेल - वहेलाल
२०. भारतीबहन गोरधनभाई वाघेला - जामसर
२१. भक्तिभाई भोलाभाई पटेल - राणीप
२२. गंगाबहन भक्तिभाई - जुलासण
२३. ज्योत्सना राजुभाई - आनंदपुरा
२४. घनश्यामभाई राजुभाई - आनंदपुरा
२५. रेखाबहन कीर्तिकुमार - ऊँझा
२६. माधवजीभाई हरखजीभाई - आद्रोजा
२७. भावना कमलेशभाई - मोरबी
२८. माणेकबहन मणीलाल - दहेगाम
२९. अमृतलाल के. मोदी
३०. पटेल गोरधनभाई शंकरदास
३१. वर्षाबहन अरविंदभाई सोनी
३२. अरविंदाबहन, वीणाबहन, सुमतीबहन, दक्षाबहन



सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिरमें श्रीहरि प्राकट्योत्सव मनाया गया

श्रीहरि द्वारा स्थापित विश्वप्रसिद्ध संप्रदाय के सर्व प्रथम स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में चैत्र शुक्ल-नवमी दि. १४-४-२००८ के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की प्रेरणा आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स.गु. स्वामी नारायणस्वरुपदासजी की प्रेरणा से उत्सव का सुंदर आयोजन किया गया था । प्रातः ६-३० से ७-०० तक अक्षरभुवन में बिराजमान घनश्याम महाराज का पाटोत्सव-अभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो से संपन्न हुआ । शिकागो के प.भ. वसंतकुमार त्रिवेदी तथा उनके चि. अमीत तथा राजन तथा उनकी धर्मपत्नी देवका बहन तथा पुत्रवधु ने यजमान बन कर अपना जीवन धन्य बनाया था ।

प्रासंगिक सभा में श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो की आरती के यजमान तथा श्री घनश्याम महाराज के पाटोत्सव के यजमान प.भ. वसंतभाई त्रिवेदी, श्री बिपीनभाई कवि, राजन त्रिवेदी तथा सामूहिक महापूजा के मुख्य यजमान प.भ. प्रवेशभाई सोनी तथा प.भ. डो. दर्षभाई झिंझावाडीया आदि सभी हरिभक्तने आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था । पू. महंत स्वामी की प्रेरणा मार्गदर्शन से सभा का संचालन शा.स्वा. धर्मकिशोरदासजीने सुंदर प्रकार से किया था । विद्वान संतोने सुंदर प्रकार से अपने इष्टदेव की महिमा का वर्णन किया था । अंत में महाराजश्रीने सभा में उपस्थित भक्तजनो को आशीर्वाद दिया था । उसके पश्चात ठाकुरजी की आरती तथा अन्नकूट की आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने उतारी थी । प.पू. लालजी महाराजने समूह महापूजा का प्रारंभ पूजन-आरती कर महापूजा की शुरुआत करवाई थी । इस महापूजा के मुख्य यजमान प.भ.अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा सत्संग मंडल के अ.नि. प.भ. कस्तुरचंद पोपटलाल झिंझुंवाडीया परिवार की तरफ से प.भ. हर्षदभाई झिंझुवाडीया तथा सह यजमान प.भ. प्रवेशबाई सोनी तथा समग्र भोजन के यजमान प.भ. घनश्यामभाई भुलाभाई पटेल (कनीपुर) तथा सुपुत्र परागकुमार मूर्ति के यजमान प.भ. जयंतीभाई मूलजीभाई पटेल (बालासिनोर) रहे थे ।

कोठारी शास्त्री स्वामी रामानुजदासजी, शा.स्वा. धर्मकिशोरदासजी, शा. वी.पी. स्वामी, विष्णु स्वामी, योगी स्वामी, छपैया स्वामी आदि संतमंडल की प्रेरणा से समूह महापूजा में ३०१ से अधिक हरिभक्तोने भाग लिया था । श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में समस्त चोक मंडप से सुशोभित तथा दिव्य लग रहा था । महापूजा विधिश्री राजुभाई ने विधिपूर्वक करवाई थी । अनेक हरिभक्तोने भाग लिया था । सुबह के ९-०० से दोपहर के २-०० बजे तक महापूजा चली थी । पूर्णाहुति के समय श्रीफल प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आहुति देकर महापूजा की पूर्णाहुति की थी । पश्चात सभामंडप में दोपहर के १-० बजे से ७-०० बजे तक स्वामिनारायण महामंत्र की धून का आयोजन किया गया था । जिसमें जयदेवपुरा के संत मंडल ने धुन की थी । इष्टदेव का प्राकटोत्सव तथा उनका अलौकिक नाम गुंजता रहे इसके लिये बालक-वृद्ध सभी इस धुन में जुड़कर भक्तिरस में डूब जाते संध्या आरती के घंटनाद के साथ ही महामंत्र धुन पूर्ण हो गयी थी।

रात्रि के ८-०० बजे दिव्य सभा मंडप में कोठारी शा. रामानुजदासजी तथा शा. धर्मकिशोरदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से कीर्तन-भक्ति के कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध कलाकार श्री दिनेश वघासीया, श्री जयेसभाई सोनी आदि कलाकारोने नंद संत द्वारा रचित कीर्तन का गान किया था तथा धवल सोनी ने प्रसंग अनुरुप अपनी भिन्न शैली में इस प्रसंग को लोकभाषा में वर्णन किया था । प.पू. बड़े महाराजश्री सभी कलाकारो का सन्मान कर आशीर्वाद दिये थे । अंत में प.पू. बड़े महाराजश्री के करकमलो से रात्रि के १०-१० को अपने इष्टदेव सर्वोपरि श्री बालस्वरुप घनश्याम महाराज के प्राकटोत्सव की आरती धामधुम से हुई थी । हजारो हरिभक्तों ने इस दिव्य तथा अलौकिक प्रसंग का दर्शन कर जीवन को धन्य बनाया था ।

महंत स्वामी तथा कोठारी स्वामी की प्रेरणा से उत्सव में पधारे हरिभक्तो को असह्य गरमी में ठंडक मिले इस हेतु से छाछ की सेवा श्री ध्रुव बिपीनभाई कवि (शिकागो) ने की थी । धन्य है सेवाभावी हरिभक्त जिन्होंने यहाँ सेवा प्रदान की थी । इस अवसर पर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा बापुनगर एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजीकी प्रेरणा से प.भ. धीरुभाई सोरढीया, दासभाई आदि हरिभक्त तथा अन्य कई हरिभक्त एवम् चांदखेड़ा जनता नगर युवक मंडल, मेमनगर, मेघाणीनगर, महादेवनगर, राणीप, जीवराजपार्क तथा कांकरिया आदि युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी । अन्य सेवा में प्रकाश भगत, अल्पेश भगत, हार्दिक भगत, घनश्याम भगत श्री भीखाभाई तथा रवि पटेल आदि कोठार स्टाफ की सेवा भी काबिले तारिफ थी । इस प्रकार रामनवमी तथा श्रीहरि प्राकट्योत्सव खूब धामधूमपूर्वक मनाया गया । *(शा. धर्मकिशोरदासजी)*

प.पू. बड़े महराजश्री का ६४ वाँ प्राकट्योत्सव

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा स्थापित श्री नरनारायणदेव पीठ के छठे निवृत आचार्य महाराज प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ६४ वाँ प्राकट्योत्सव चैत्र वद-३ प्रसादी के सभा मंडप में अहमदाबाद मंदिर स्कीम कमिटी सभ्य तथा अग्रगण्य हरिभक्तोने प.पू. बडे महाराजश्री की आरती उतार कर आशीर्वाद प्राप्त किया था । पश्चात प.पू. बडे महाराजश्री की इच्छानुसार सिर्फ सर्वोपरि इष्टदेव की भक्तिकर उत्सव मनाया । जिससे संप्रदाय के प्रसिद्ध कलाकार श्री हसमुखभाई पाटडीया तथा जयेसभाई सोनी ने हृदय को हिला देनेवाला सांप्रदायिक रुपका प.पू. बडे महाराजश्री द्वारा निर्मित पद का गान किया था ।

संप्रदाय में प.पू. बडे महाराजश्री की अलौकिक प्रतिभा तथा श्रीजी महाराज के अपर स्वरुप का गुणगान करने वाला ऐसा कीर्तन जीव मात्र का कल्याण कारक था । अंत में प.पू. बडे महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए बताया कि श्री नरनारायणदेव की कृपा से दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम का मैंने प्रारम्भ किया है । इसके बाद संत-हरिभक्त चरण स्पर्श तथा दर्शन करके श्रृंगार आरती का लाभ लेकर सभा को पूर्ण किये । आज की इस शुभ सभा का संचालन शा. धर्मकिशोरदासजी ने किया था । को.स्वा. रामानुजदासजी, पी.पी. स्वामी तथा विष्णु स्वामी की प्रेरणा से संत-हरिभक्तों की सेवा प्रसंशनीय थी। *- रवि पटेल*

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडीया

श्री नरनारायणदेव विभाग के घाटलोडीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से निष्ठावान हरिभक्तों द्वारा सतत ७ वर्ष तक ज्ञानज्योत स्कूल में प्रत्येक एकादशी की सत्संग सभा का आयोजन हुआ । सभा में जो भी हरिभक्त आते वे नियम, निश्चय, पक्षवाले थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा वर्तमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ पर भव्य मंदिर का निर्माण हुआ । सं. २०६३ फाल्गुन शुक्ल-१० के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई । प.पू. बडे महाराजश्री का संकल्प पूर्ण हुआ । मंदिर निर्माण होते ही भी नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावाले हरिभक्तों की खूब वृद्धि हुई है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ता. १-४-०७ से प्रति शनिवार को रात्रि में ९ से ११ तक सभा का आयोजन करता है । जिस में धुन-कीर्तन-शास्त्र का वांचन किया जाता है।

युवक मंडल सेवा में लगजाता है । हरिभक्तों के सहयोग से अपने छोटे-बडे मंदिरों की तीर्थयात्रा का आयोजन करके तीर्थों का माहात्म्य समझाकर आश्रित बनाया जाता है । व्यसन मुक्ति के अभियान से बहुत सारे व्यसन रहित हुए हैं।

प.पू. बडे महाराजश्री के दामाद पू. श्री प्रफुलकुमार के अक्षरवास के निमित ता. ६-४-०८ के दिन ६ घन्टे तक अखंड महाधुन का आयोजन हुआ था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा प्रति शनिवार को सभा का आयोजन किया गया था । सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के गादी स्थान के निष्ठावान हरिभक्तों का नियम है कि प.पू.ध.धु. महाराजश्री की आज्ञा में सत्संग की प्रवृति बनी रहे ऐसी श्रीहरि के चरणों में प्रार्थना।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, घाटलोड़िया

पूज्य श्री प्रफुलकुमार आर. द्विवेदी साहब के अक्षरनिवास के निमित्त प्रत्येक मंदिर में धुन का कार्यक्रम

प.पू. बड़े महाराजश्री के दामाद पू. श्री प्रफुल्लकुमार आर. द्विवेदी साहब का अचानक अक्षरवास से प.पू. बड़े महाराजश्री के धर्मकुल परिवार के साथ समग्र सत्संग को आघात लगा है । ऐसे दु:खद प्रसंग पर इष्टदेव का स्मरण अपने प्रत्येक मंदिरों में हो ऐसे अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामीने सूचना दी है । जिससे श्री स्वामिनारायण देश के अहमदाबाद मूली, भुज के प्रत्येक छोटें-बड़े मंदिरो में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन की गयी थी । एप्रोच बापूनगर मंदिर में यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से ता. ३१-३-०८ से ता. ९-४-०८ तक १ घन्टे की धुन की गयी थी ।

इस प्रकार प्रत्येक मंदिरो में पू. प्रफूल्लकुमार के अक्षरवास के निमित्त श्रीहरि की महामंत्र धुन करके संत हरिभक्तों ने भावभीनी श्रद्धांजलि दी थी ।

- गोरधनभाई वी. सीतापरा

नवा वाड्ज श्री स्वामिनारायण मंदिर में शदाब्दी महोत्सव मनाया गया

नवा वाडज श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर का जीर्णोद्धार हुए १० वर्ष वीत गया था । जिससे शदाब्दी महोत्सव मनाया गया था । जिस में मंदिर द्वारा दस मंदिरोकी पदयात्रा, कालुपुर, गांधीनगर, जेतलपुर, वासणा, नारायणपुरा, नारायणघाट, कांकरिया, जमीयतपुरा, अेप्रोच तथा कोटेश्वर मंदिर की पदयात्रा के साथ १० अलग-अलग विस्तारो में संत हरिभक्तों द्वारा सभा का आयोजन किया गया था । इसी तरह महापूजा, वचनामृतपाठ, भक्त चिंतामणी पारायण शिक्षापत्री १००० पाठ तथा १० घन्टे की अखंड धून हुई थी । इसके साथ दंडवत प्रदक्षिणा लोगो ने किया था । ता. ६-४-०८ से १०-४-०८ तक सत्संगिजीवन पारायण तथा हरियाग का आयोजन भी किया गया था । यक्तापद पर शा. रामकृष्णदास थे । हजारों भक्तों ने कथा श्रवण किया । इस प्रसंग पर प्रतिदिन करीब ५० जितने संत प्रेरक वाणी का लाभ देते थे । पाटोत्सव तथा हरियाग के मुख्य यजमान अ.नि. श्री केशवजीभाई नानजीबाई चौहाण परिवार तथा सहयजमान श्री वालजीभाई कानजीभाई पोरिया, रसोई के यजमान श्री भीखाभाई परमार, श्री सोमाभाई पटेल, श्री हीरजीभाई, श्री नरसिभाई पटेल परिवार तथा दैनिक प्रसादी के यजमान श्री मनजीभाई पटेल परिवार तथा संतो के पूजन के यजमान श्री भरतभाई पटेल तथा श्री पंकजभाई भावसार थे । इस प्रसंग पर १५० जितने भक्त इस शुभ कार्य के सहभागी थे । चैत्र शुक्ल-५ पंचमी ता. १०-४-०८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से हरियाग की पूर्णाहुति की गई थी । इसके बाद मंदिर में ठाकुरजी का पाटोत्सव अन्नकूट की आरती उतारे थे । अंत में समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । इस अवसर पर हजारों भक्तजन दर्शन एवं प्रसाद का लाभ लिये थे । कोटेश्वर के छोटे पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में आयोजन संपन्न हुआ था ।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, नवावाडज

धनसुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा अ.नि.ब्र. मुनि स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी का १६ वाँ पाटोत्सव चैत्र शुक्ल-५ के दिन धूमधाम से मनाया गया था । पाटोत्सव के प्रसंग पर शा. छपैयाप्रसाददासने महापूजा की विधिकरायी थी । *- सोमाभाई पटेल*

भुंडिया (जि. गांधीनगर) गाँव में सत्संग सभा

यहाँ के भुंडिया गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से जमीयतपुरा से शा.घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा महंत) तथा संत मंडल ता. ६-४-०८ के दिन सत्संग सभा में भगवान श्री स्वामिनारायण की महिमा को तथा धर्मकुल की महिमा को समझाया था । माणसा से पी.पी. स्वामी तथा गवैयाचन्द्रप्रकाश स्वामी ने कीर्तन भक्ति करके हरिभक्तों को प्रसन्न किया था । बहुत समय के बाद इस गाँव में संतो द्वारा सत्संग का लाभ मिला था । इससे सारे गाँव के भक्त आनंदित होगये थे । *- शा. विजयप्रकाशदास*

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहां के नारायणपुरा मंदिर में सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज का १४ वाँ पाटोत्सव ता. १६-२-०८ के दिन महंत शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री इन्द्रवदनभाई मणीलाल शाह परिवार की तरफ से मनाया गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज के वरद् हाथों से सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक तथा अन्नकूट की आरती की गई थी । प्रासंगिक सभा में पाटोत्सव

के यजमान श्री इन्द्रवदनभाई शाह के पुत्रों ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था । शाकोत्सव में नवयुवान हरिभक्त शरदकुमार गोविंदभाई खीमजीभाई पटेल एक साथ यजमान बने थे । जिससे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री खूब प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये थे । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाकी प्रेरणा से श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया था । जिसके वक्ता शा. स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजीने अलौकिक दिव्य लाभ दिया था । यहाँ पर प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाया गया था । बड़ी संख्या में हरिभक्त भाग लिये थे ।

- पूजारी स्वा. स्वयंप्रकाशदास

कलोली श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुर धाम में विराजमान श्री रेवती बलदेव हरिकृष्णा महाराज के सानिध्य में आये हुए कलोल गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर में फाल्गुन शुक्ल-३ के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की पाटोत्सव अभिषेक तथा अन्नकूट का भोग लगाकर आरती की गई थी । इसके बाद दोपहर में यज्ञ का आयोजन किया गया था । पाटोत्सव के यजमान श्री पोपटलाल लालजीभाई ठक्कर परिवार ने लाभ लिया था । इस प्रसंग पर जेतलपुर से हरिओम स्वामी, के.पी. स्वामी, शोकली से रघुवीर स्वामी तथा मातर से घनश्याम स्वामी इत्यादि संत कथा-प्रवचन करके श्री नरनारायणदेव गादी का माहात्म्य समझाकर नियम, निश्चय, पक्ष रखने की बात की थी ।

- वाडीलाल चंदुलाल ठक्कर

श्री स्वामिनारायण मंदिर जयपुर (राजस्थान)

जयपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में सत्संगी यात्रिकों के लिये अद्यतन सुविधा के साथ रहने की (ठहरने की) सुंदर व्यवस्था की गई है ।
दर्शनार्थी हरिभक्तों को लाभ लेने के लिये अनुरोधहै ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर - जयपुर
चांदपोल बजार, दिनानाथ की गली में,
फोन : (०१४१) २३२०६९४

श्री स्वामिनारायण संस्कृत महा विद्यालय जेतलपुर धाम में प्रवेश की सूचना

आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा संस्थापित तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से संचालित श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्याल में नये सत्र से प्रवेश के लिये विद्यार्थी मार्कसीट की झेरोक्ष कापी १ फोटो-१ डो. मेडिकल रीपोर्ट फोर्म के साथ लगाकर ता. २५-५-०८ तक नीचे के पते पर भेंज सकते हैं । प्रवेश योग्यता सरकार मान्य किसी विद्यालय से उत्तीर्ण किया हुआ छात्र किसी भी कक्षा में प्रवेशार्ह है ।
नोंट : ता. १-६-०८ रविवार को प्रात: ९-०० बजे लिये जाने वाले इन्टरव्यु में पास विद्यार्थियों को ही प्रवेश मिलेगा ।
फोर्म मिलने का स्थल
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद
फोर्म प्राप्ति तथा इन्टरव्यू स्थल
संचालकश्री
श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय
ता. दस्क्रोई, जि. अहमदाबाद, जेतलपुर
फो. : (०२७१८) २३२५००, २३३९६०

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

खोलडीयाद गाँव में आयोजित भागवत पारायण

मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के स.गु. आधारानंद स्वामी के पूर्वाश्रम के खोलडीयाद (जि. सुरेन्द्रनगर) गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मूली के अ.नि. स.गु. स्वामी माधवजीवनदासजी (माधदा स्वामी) के स्मरणार्थ भागवत सप्ताह पारायण स.गु. स्वामी लक्ष्मीप्रसादजी तथा स.गु. स्वामी हरिस्वरुपदासजी की प्रेरणा से खोलडीयाद के प.भ. रामजीभाई गोहिल परिवारने तथा समस्त गाँव वालो ने आयोजित किया था । इस कथा के वक्तापद जमीयतपुरा के शास्त्री स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा महंतश्री) ने लाक्षणिक शैली में कथा करके झालवाड के हजारो भाविक भक्तों ने कथारस का पान करवाया था । इस अवसर पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे तथा प्रासंगिक सभा में आशीर्वाद देते हुए अ.नि. माधदा स्वामी के पुराने संस्मरण याद किये तब समस्त खोलडीयाद गांव मंत्रमुगधबन गया था । श्रीहरि के साक्षात् अपर स्वरुप प.पू. बडे महाराजश्री अपने छोटे से छोटे संत को कितने भाव से याद करते है । तब समस्त संप्रदाय को गर्व होता है कि साक्षात् परमात्मा के रुप महाराजश्री मिले जो हमारा भाग्य है । इस अवसर पर अयोध्या से महंत देव स्वामी, मूली से जे.पी. स्वामी, अनुस्वामी, श्रीप्रकाश स्वामी, चंदु भगत आदि लोगो की सेवा प्रसंशापात्र थी । सभा संचालन पा. भरत भगतने किया था ।

-जयेश दलवाडी, मूली

विदेश सत्संग वृत्तान्त

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

अपने कोलोनिया (अमेरीका) श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव जयंती तथा फूलदोलोत्सव पर चेरीहील, पारसीपेनी, न्युयोर्क, आदि शहेरो के सेंकडो हरिभक्त दर्शनार्थ पधारे थे । महंत शा. स्वामी व्रजनंदनदास तथा शा. हरिवल्लभदास आदि संतोने फूलदोलोत्सव तथा श्री नरनारायणदेव जयंती का महात्म्य दृष्टांत के साथ समझाया था । यजमान परिवार तथा महेमानो का स्वामीने पुष्पहार से सन्मान किया था । पश्चात होली पूजन तथा हरिभक्तोने

समूह में जनमंगल पाठ आदि किये थे। अंत में ठाकुरजी की आरती कर सभी को प्रसाद बांटा गया।

कोलोनिया मंदिर में अ.नि.पू. श्री प्रफुलकुमार को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

यहाँ कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में २९-३-०८ को शनिवार शाम ५-०० बजे से ८-०० बजे तक प.पू. बडे महाराजश्री के दामाद पू. श्री प्रफुलकुमार के अक्षरनिवास के अवसर पर श्रद्धांजलि देने के लिये हजारो हरिभक्त उपस्थित रहे थे । कोलोनिया मंदिर में महंत शा.स्वा. सिद्धेश्वरदासजीने पू. श्री प्रफुलकुमार को भावपूर्वक श्रद्धांजलि देते हुए कहा था कि उनके अक्षरवास से धर्मकुल तथा द्विवेदी साहब के परिवार के ऊपर बडा दुःख आ गया है। श्री नरनारायणदेव देश सत्संग परिवार में भी अशांति पैदा हो गयी है। सर्वोपरि श्रीहरि हंमेशा अपने सेवा में रखे तथा हमारे महाराजश्री को एसा दुःख सहन करने की शक्ति दे तथा अपने सभी मंदिरो में इस अवसर पर स्वामिनारायण भगवान की विशेष धून करने की सलाह दी थी। अंत में सभी हरिभक्तोने जनमंगल के पाठ किये थे। अंत में श्रीहरि की प्रार्थना करते हुए कहा था कि पू. बिन्दुराजा, श्री सुव्रतकुमार तथा सौम्यकुमार को उनके दादा सर्वोपरि श्रीहरि धैर्य तथा बल दे इस प्रार्थना के साथ सभापूर्ण हुई थी।

- प्रविणभाई शाह

श्री पूर्व आफ्रिका सत्संग स्वामिनारायण मंदिर नाईरोबी

अपने श्री पूर्व आफ्रिका सत्संग स्वामिनारायण मंदिर नाईरोबी में श्री नरनारायणदेव गादी के प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की शुभ आज्ञा से बाल युवती (महिमा) शिबिरका सुंदर आयोजन किया गया था। जिस में विविधविषयो पर संवाद किया गया था। स्लाईड सो से सत्संग में सेवा बगैर शर्म के करनी चाहिए तथा अपने बर्ताव के बारे में जानकारी दी गयी थी। जिस में हस्मिताबहन राबडीया, कांताबहन भंडेरी आदि बहनोने जीवन आदर्श बनाने के लिये शास्त्र तथा अनुभव के आधार पर सुंदर समझ दी थी। प्रत्येक व्यक्ति के लिए १४ से २५ वर्ष का जीवन काल खूब निर्णायक होता है। इस समय के दौरान जीवन जीने की सही दिशा प्राप्त न हो तो कुसंग, खराब आदते गफलत के कारण हुए दोषो से बचने के लिए सत्संग अनिवार्य है।

खास तो हमे जीवन में क्या मिला है ? मेरा जन्म क्यो हुआ है ? यह लक्ष पकडाये तथा युवानी के आरंभ मे ही आध्यात्मिक जीवन का नीव मजबूत बने आदर्श बने । किन्तु ऐसा बनने के लिए कौटुंबिक जीवन कोलेजे, जीवन, सामाजिक जीवन तथा आध्यात्मिक जीवन में कैसा ध्यान देना चाहिए यह समझाया था। जीवन को आदर्श बनाने का प्रयास करना चाहिए उस पर दृष्टांत के साथ समझाया था। शिबिर में ७०० से अधिक युवती ने भाग लिया था।

शिबिर आयोजन श्री पु.आ.स.स्वा. मंदिर युवती मंडल के सक्रिय कार्यकर श्री हस्मिताबहन राबडीयाने किया था।

- कांताबहन राधवाणी तथा तेजुबहन पिंडोरीया

वोशिंग्टन डी.सी. (I.S.S.O. चेप्टर)

दि. १६ मार्च को रविवार शाम को ३-३० से ८-०० बजे तक ४॥ घंटे सर्वना पार्क कम्युनीटी होल में सत्संग सभा का आयोजन किया था। जिसमें "आज मारे ओरडे" पदसे प्रारंभ हुआ था। पश्चात नंदसंतो के कीर्तन गाये गये थे। अपने चेरीहील मंदिर में प.भ. रुषिभाई के साथ आये हुए शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासने सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव तथा श्री रेवतीबलदेवजी महाराज के चरणों में प्रार्थना करे यह कहा था। अंत में वचनामृत (२७३) का अमृतपान, थाल, आरती, ठाकुरजी के समक्ष समूह में हुए थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग की उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

- कनुभाई पटेल

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

मरतोली : प.भ. बेचरभाई रामदास पटेल दि. १-३-०८ को श्रीजी महाराज का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

नवा वाडज : प.भ. रमणलाल हरगोवनदास भावसार प्लाकरोडावाले श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए १९-४-०८ को अक्षरनिवासी हुए है।

जीरागढ (हालार) : श्री मगनभाई लालजीभाई राठोड (वर्ष ७०) ता. १७-४-०८ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

मेडा (अहमदाबाद) : सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव गादी के अनन्य निष्ठावान तथा खाखरिया झालावाडी समाज के गौरव श्री ओधवजीभाई पटेल के पिताजी श्री जादवजीभाई सुंदरजीभाई पटेल श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए ता. २८-४-०८ के दिन अक्षरनिवासी हुए है।

कणभा (विजापुर) : सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव गादी के अनन्य निष्ठावाले युवान श्री जयेशबाई प्रहलादभाई गणपतराम मेवाडा (वर्ष २८) श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए ता. २२-४-०८ के दिन अमेरिका में अक्षरनिवासी हुए हैं। श्रीहरि उनके परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति दे ऐसी प्रार्थना।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।







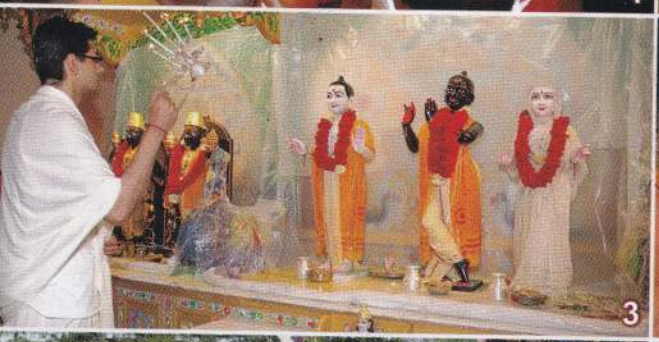


(१) नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री हनुमान जयंती के प्रसंग पर यज्ञ में श्रीफळ की आहुति देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री । (२) प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथों से संत दीक्षा । (३) भायंदर मुंबई में हमारे श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल आयोजित विशाळ सत्संग सभा में प.पू. महाराजश्री की शुभ निश्रामें संत कथा करते हुए । (४) चूड़ा गाँव मूली देश, नूतन श्री स्वामिनारायण (बहनों का) में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री । (५) हमारे ईष्ट आफ्रिका स. स्वा. मंदिर नाईरोबी में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वाद से आयोजित महिला सत्संग शिबिर ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08

















कलिवलेन्ड के भव्य मंदिर को दर्शन हेतु खोलते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री । (२) अमेरिका में कलिवलेन्ड में हमारे (आई.एस.एस.ओ. संस्थापित(नूतन शिखरबद्ध मंदिर में श्री नरनारायण, श्री राधाकृष्णदेव, हरिकृष्ण महाराज तथा श्री लक्ष्मीनारायण आदि देवो की मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री । (३) कलिवलेन्ड मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री । (४) मुमुक्षु को नियम देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ महंत स्वामी पी.पी. स्वामी तथा श्री प्रकाशभाई । (५-६) कलिवलेन्ड के भव्य राजमार्गो.पर शोभायात्रा में दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री तथा लाभ लेते हुए वहाँ के मेयरश्री तथा अन्य महानुभाव ।

(079) 26580916, 9879036686